आचार्य विनोबा भावे

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री ऑफ़ इन्फ़ार्मेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग
गवर्नमेंट ऑफ़ इण्डिया

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय

विषय-परिचय ... ३

दूसरा अध्याय

उद्देश्य ... ७

तीसरा अध्याय

आन्दोलन के प्राण ... २१

चौथा अध्याय

सन्देश ... ४६
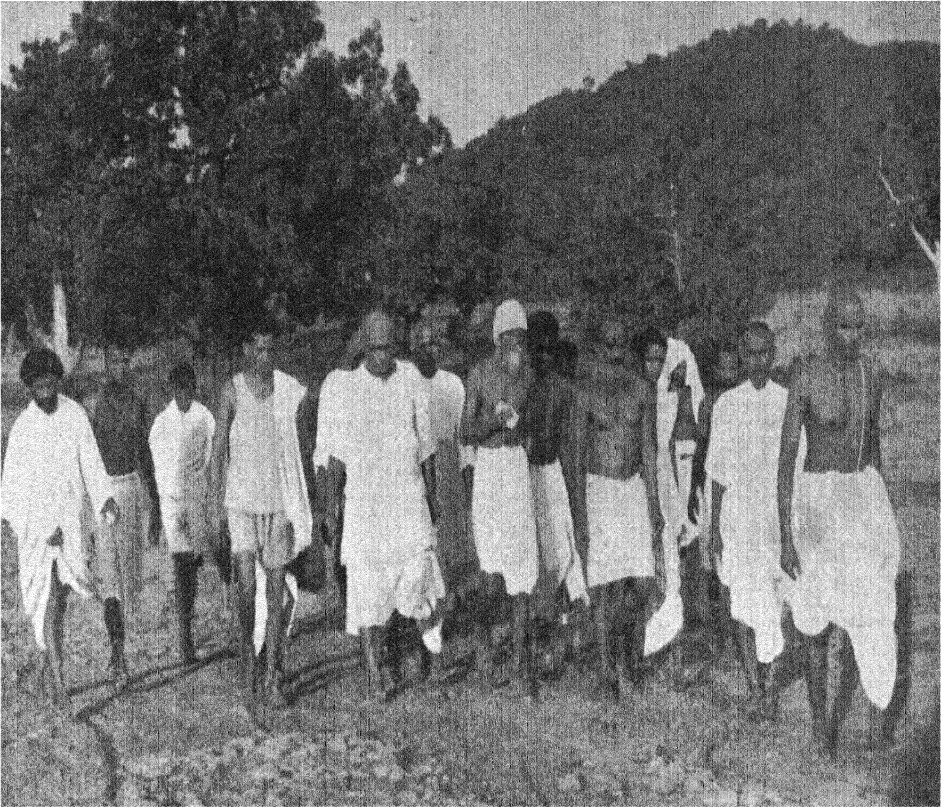
खादिग्राम (बिहार) में विनोबा भावे

पहला अध्याय

विषय परिचय

मार्च १९५१ में एक दुबला-पतला सत्याग्रही वर्धा से पैदल ही हैदराबाद की ओर चल दिया। उसकी इच्छा थी कि साम्यवादियों के प्रभाव में आये हुए तेलंगाना प्रदेश की हालत को वह अपनी आँखों देखे। कौन जानता था कि यह बात आधुनिक भारत के इतिहास की एक प्रमुख घटना बन जायगी।

ऐसी थी आचार्य विनोबा भावे की यात्रा।

विनोबा जी की यह तेलंगाना यात्रा हमें एक ऐसी ही दूसरी यात्रा के कष्टों की याद दिलाती है। यह यात्रा लगभग ६ साल पहले गांधी जी ने की थी। १९४६ में जब हम

बोधगया के अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन में भाषण दे रहे हैं

लोग स्वतन्त्रता की दहलीज़ पर खड़े थे इस देश के कुछ हिस्सों में, विशेषकर बंगाल के नोआखली तथा पंजाब और बिहार के ज़िलों में, भयंकर साम्प्रदायिक झगड़े उठ खड़े हुए और गड़बड़ फैल गई। नोआखली के बीहड़ प्रदेश में गांधी जी गाँव से गाँव तक पैदल घूमे, उन्होंने वहाँ मिलने वाले फलों और सब्जियों पर गुज़ारा किया और वहाँ के हिन्दू और मुसलमानों के दिलों में साहस और धैर्य का संदेश भरने के लिए वे दिनरात प्रयत्न करते रहे। गांधी जी ने घोषणा की—'मेरे सामने केवल एक उद्देश्य है और वह बहुत साफ है। भगवान् हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों को पवित्र बनाए और दोनों जातियां एक दूसरे के प्रति डर और संदेह की भावना से रहित हों।'

आचार्य विनोबा भी अपने गुरु के समान तेलंगाना के भयग्रस्त प्रदेशों में शान्ति और सद्भावना के सन्देश को लेकर घूमे। गुरु और शिष्य दोनों का समान ध्येय था, और वह था—घृणा और डर के कारण उजड़े हुए स्थानों में शान्ति, प्रेम और साहस के सन्देश की बेल बोना।

तेलंगाना के मार्ग विहीन दुर्गम प्रदेशों में से गुज़रते हुए विनोबा जी को एक प्रकाश की किरण दिखाई दी : दुःखी मनुष्यों के कष्टों को दूर करने का एक उपाय सूझा; जो एक नये दार्शनिक दृष्टिकोण का परिचायक था। उन्होंने सोचा और फिर लोगों को कहा—'ज़मीन भगवान् ने बनायी है और मनुष्य उसके मालिक बनने के हकदार नहीं हैं। वे केवल उसके सेवक हो सकते हैं। इस सचाई को समझे बिना हम इसके मालिक बनना चाहते हैं। यह ऐसा दावा है जिसे किसी प्रकार भी न्याययुक्त नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए भूमिहीनों का भूमि के प्रति अधिकार हमें मानना ही चाहिये।' यही विचार 'भूदान-यज्ञ' आन्दोलन के मूल में है। 'भूदान-यज्ञ' का मतलब है अपनी इच्छा से दूसरों के लिए अपनी ज़मीन को दान में दे देना।

इस विचार ने भारत की भूमि-समस्या के प्रति हमारे दृष्टिकोण में एक बड़ा परिवर्तन ला दिया है और देश में एक नई जागृति की भावना पैदा कर दी है। विनोबा जी इस बात को अच्छी प्रकार समझते हैं कि भारत की पेचीदा भूमि समस्या का यह कोई अन्तिम हल नहीं है, यह तो केवल नैतिक दृष्टि से उचित वातावरण पैदा करेगा जिससे लोगों की मान्यताओं में परिवर्तन हो जायेगा।

गांधी जी ने सत्याग्रह के द्वारा भारत के करोड़ों लोगों को राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करवायी और अब उनके शिष्य विनोबा जी सर्वोदय द्वारा उन्हें आर्थिक स्वतन्त्रता की ओर ले जा रहे हैं जो उतनी ही मुख्य है जितनी कि पहली। एक फ़कीर की तरह इस उपमहाद्वीप में चक्कर लगाते हुए विनोबा जी भूमि माँगते हैं, और यह भूमि उन्हें सब की सद्भावना के साथ सैकड़ों और हज़ारों एकड़ मिलती है। सारे संसार का ध्यान इस 'शान्ति सेना के सिपाही' की ओर लगा हुआ है। अपने गुरु की तरह विनोबा जी ने भी स्पष्ट रूप से दूसरों को प्रभावित करने वाली आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया है। सत्य, अहिंसा, नम्रता, दयालुता और ईमानदारी के शस्त्रों से सुसज्जित विनोबा जी भूदान यज्ञ की सफलता के साथ साथ एक नये इतिहास का निर्माण कर रहे हैं।
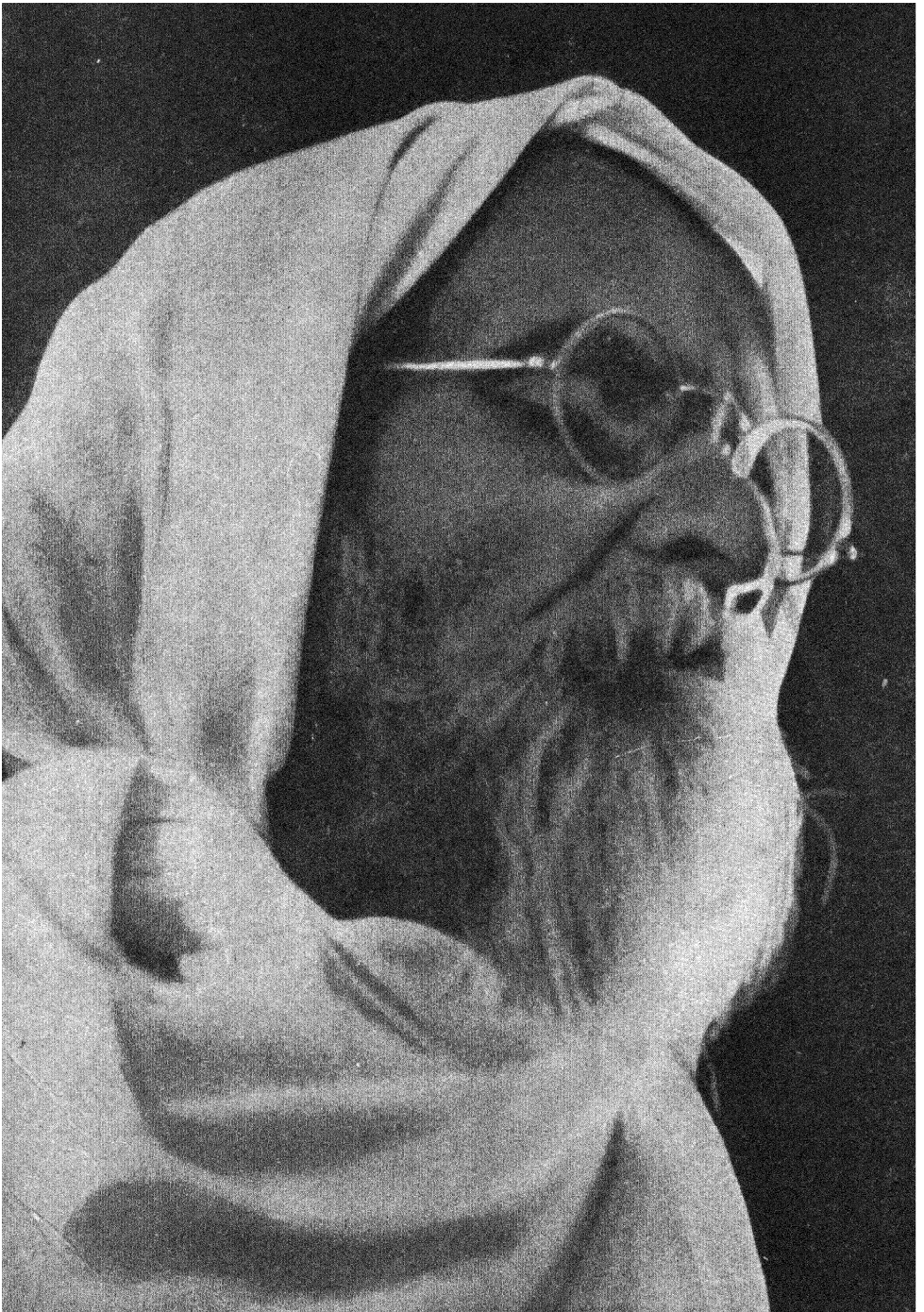
दूसरा अध्याय

उद्देश्य

भारत के रंगीन इतिहास के पन्ने पलटने पर हम देखेंगे कि इस देश ने पेचीदा और कठिन समस्याओं को हल करने के लिए प्रायः नये ही तरीके अपनाए हैं।

ज़मीन और उत्पादन के दूसरे साधनों का ठीक-ठीक बँटवारा न होने के कारण दूसरे देशों की तरह भारत में भी गहरा असंतोष है। विनोबा जी का विचार है कि बढ़ती हुई आर्थिक असमानता तथा थोड़े से व्यक्तियों के पास सम्पत्ति का इकट्ठा हो जाना प्रतिक्रियावाद का परिणाम है। यह हमारे देश के सामाजिक और आर्थिक जीवन के विकास में एक बड़ी बाधा है। कोई भी देश जहाँ कुछ थोड़े से व्यक्तियों और जनता में—धनियों और गरीबों में—चौड़ी खाई विद्यमान हो कभी सुखी और समृद्ध नहीं हो सकता। भारत एक कृषि-प्रधान देश है। इस देश के ७० प्रतिशत आदमी भूमि से अपनी आजीविका चलाते हैं। इसलिए इस देश की भूमि-समस्या का शान्तिपूर्ण हल न केवल वाञ्छनीय है अपितु आवश्यक भी है। आचार्य विनोबा का कथन है—'हमें यह सचाई समझ लेनी चाहिए कि भगवान् की ऐसी इच्छा है कि यह पुण्यभूमि शान्तिपूर्ण उपायों से सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति ले आने के परीक्षण को सफलता पूर्वक पूरा करे।'

मानव इतिहास में पहली बार सत्य और अहिंसा के पुजारी विनोबा जी अपने देश के लोगों के लिए आध्यात्मिक पुनरुत्थान के आधार पर सामाजिक न्याय की खोज में चल पड़े हैं।

भारत के दार्शनिक ज्ञान तथा प्राचीन साहित्य और संस्कृति के पूरे जानकार विनोबा जी मनुष्यों के भौतिक सम्पत्ति के प्रति मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में एक बड़ा परिवर्तन लाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

यहाँ की जनता का सामाजिक आचरण की दृष्टि से ऊपर उठना ही विनोबा जी की नज़रों में इस देश के लिए और सारे संसार के लिए आशा की एक किरण है। विनोबा

जी के ये नैतिक सिद्धान्त भारत के करोड़ों अज्ञानी और गरीबों के लिए एक नई आशा लाये हैं। सारे संसार के अमीरों और ग़रीबों में एक समान भाई-चारे की भावना को पैदा करने की उनकी महान् आकांक्षा है।

आचार्य जी की यह दृढ़ सम्मति है कि यह सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता शान्तिपूर्ण तरीकों से ही प्राप्त की जानी चाहिये। मनुष्यों की आत्मा की हत्या किये बग़ैर, घृणा और हिंसा से दूर रह कर यह किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ही उनका यह भूदान-यज्ञ सत्याग्रह है। विनोबा जी का विचार है कि यदि ऐसे समाज की आत्मा को—जिसमें कुछ तो भूमि विहीन हैं तथा दूसरे कुछ लोग भूमि के स्वामी बने हुए हैं—एक बार जगा दिया जाये तो फिर वे चुपचाप नहीं बैठेंगे। वे कहते हैं—'लोगों को यह सिद्धान्त मान लेना चाहिये कि हवा और पानी की तरह सारी ज़मीन भी गोपाल की है।'

अपने कथन पर ज़ोर देते हुए उन्होंने इस बात की घोषणा की—'जब तक इस समाज-व्यवस्था के स्थान पर जो कि असमानता, विरोध और झगड़े पर टिकी हुई है, समानता और आपसी सहयोग पर आधारित एक दूसरी व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया जाता तब तक मनुष्य समाज की मुक्ति नहीं हो सकती।'

अपने इस लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए एक बार विनोबा जी ने कहा—'अब राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद हमें अपने देश में समानता और भाई-चारे की स्थापना के लिए काम करना चाहिये। मैंने इस काम का नाम सर्वोदय (सब की खुशहाली) रक्खा है।

'इस सर्वोदय की स्थापना के लिए ही मैं गाँवों में घूम रहा हूँ......मैं इसे ही अपनी पंचवर्षीय योजना कहता हूँ। यदि आप सब लोग भी अगले पाँच सालों के लिए इस काम को अपनालें और इतने समय में ५ करोड़ एकड़ भूमि भूमिहीनों को दिलाने में सफल हो सकें तो एक बहुत बड़ी अहिंसक क्रान्ति हो जायेगी।'

विनोबा जी के भूदान-यज्ञ का श्रीगणेश भी अत्यन्त रोचक और अर्थपूर्ण था। अप्रैल १९५१ में विनोबा जी हैदराबाद राज्य के शिवरामपल्ली गाँव में मनाये गये दूसरे सर्वोदय समाज सम्मेलन की कार्यवाही में भाग लेने के लिए पैदल गये थे। यह समाज गांधीवाद में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों द्वारा चलाये गये अखिल भारतीय आन्दोलनों में प्रमुख भाग लेता है। सम्मेलन की समाप्ति के बाद विनोबा जी ने पैदल ही सेवाग्राम लौटने का निश्चय किया। उनका विचार था कि वे वापसी के समय कई वर्षों से साम्य-वादियों की कार्रवाइयों के केन्द्र तेलंगाना के प्रदेश में से होकर लौटें। तेलंगाना में साम्य-वादियों ने भूमिहीन किसानों में ज़मीन के फिर से बँटवारे के लिए एक आन्दोलन चला रक्खा था। अपने इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए वे पुराने पट्टों को नष्ट कर देते थे,

ज़मींदारों को धमकियाँ देते थे और हिंसा द्वारा लोगों में डर पैदा करते थे। जब विनोबा जी ने कुछ साथियों के साथ अपनी तेलंगाना यात्रा के निर्णय की घोषणा की तो हैदराबाद की सरकार ने उनके लिए पुलिस की सहायता देने का प्रस्ताव किया। किन्तु विनोबा जी ने ऐसी सहायता लेने से इन्कार कर दिया।

अपनी यात्रा के तीसरे दिन १८ अप्रैल १९५१ को विनोबा जी पोचमपल्ली गाँव पहुँचे। गाँव में प्रवेश करते ही उन्हें ४० हरिजन परिवारों ने घेर लिया और उनसे ज़मीन दिलाने की प्रार्थना की। विनोबा जी कुछ सोच नहीं पा रहे थे कि क्या किया जाये ? उनके पास अपनी कोई जमीन थी नहीं। इसलिए उन्होंने कहा—'मैं सरकार के साथ इस विषय में बातचीत करूँगा।'

सहसा एक दूसरा विचार उनके मन में आया; उन्होंने सोचा क्यों न मैं इन लोगों से ही पूछूँ कि क्या कोई अपनी भूमि का कुछ हिस्सा इन भूमिहीन गरीबों को देने के लिए तैयार है ? बहुत ही थोड़ी आशा से उन्होंने पूछा—'क्या यहाँ पर कोई ऐसे सज्जन हैं जो अपनी ज़मीन का थोड़ा सा भाग इन ग़रीबों के लिए देंगे ?' और कितने अचरज की

बात—एक आदमी जो विनोबा जी के सामने ही बैठा था खड़ा हो गया और बोला—'इन कुछ वर्षों से मैं अपनी २०० एकड़ ज़मीन का आधा भाग दान देने के लिए अवसर खोज रहा था, और आज वह पवित्र क्षण आ गया है। मैं अपनी १०० एकड़ ज़मीन मेरे गाँव के गरीब आदमियों में बाँटे जाने के लिए आप को देता हूँ। मेरी विनति है कि आप इस तुच्छ भेंट को अस्वीकार न करें। विनोबा जी और सारे श्रोतागण यह सुन कर गद्गद् हो गये। विनोबा जी के मुख से निकला—'यह ईश्वर की देन है।' उन्होंने उस गाँव के ४० हरिजन परिवारों से पूछा कि उनके लिए कितने एकड़ ज़मीन पर्याप्त होगी? आपस में थोड़ी देर सलाह-मशविरा करने के बाद उनमें से एक आदमी खड़ा होकर बड़ी दीनता से बोला—महाराज, फ़ी परिवार दो एकड़ के हिसाब से हमारे लिए ८० एकड़ ज़मीन बहुत है। प्रश्न की तरह यह उत्तर भी विनोबा जी और श्रोताओं को अचरज में डाल देने वाला था। कुछ दिनों बाद विनोबा जी ने बताया—'यह एक अनहोनी घटना थी कि एक आदमी ने ज़मीन माँगी और उसे इतनी आसानी से वह मिल भी गई।'

उस रात को विनोबा जी देर तक चिन्तन करते रहे और तब अन्तरात्मा की यह स्पष्ट आवाज़, इस नये प्रकार के यज्ञ के लिए अपने जीवन को लगा देने के लिए उन्हें प्रेरित करती हुई, सुनाई दी। भूदान-यज्ञ के मूल में यही घटना थी।

भूदान-यज्ञ मानवीय दृष्टिकोण को बदलने के लिए एक क्रान्तिकारी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज़मीन का स्वामित्व भूमिपतियों से बदल कर भूमिहीनों के पास चला जायेगा। विनोबा जी कहते हैं—'मेरा आन्दोलन मुख्यतः मनुष्य के पुनरुत्थान के लिए और जीवन के आर्थिक मूल्यों को नया रूप देने के लिए एक नैतिक आन्दोलन है।'

फिर भी विनोबा जी किसी नये सिद्धान्त का प्रचार नहीं कर रहे हैं। उपनिषदों में भी इस विचार के बीज मौजूद हैं। यह नया तो केवल इसलिए लगता है कि समय ने इसे एक नया महत्त्व दे दिया है। देश के गाँव गाँव में घूम कर वे ज़मींदारों को समझाते हैं कि वे अपनी ज़मीन का कुछ भाग भूमिहीनों के लिए भी दें। अपने श्रोताओं से वे कहते हैं—'लेने वाले की अपेक्षा देने वाला अधिक भाग्यशाली है।'

भारत की विशाल भूमि-समस्या को सुलझाने में भूदान-यज्ञ की महत्ता के विषय में भारत के भी बहुत से मनुष्यों ने शंकाएँ की हैं। इन शंकाओं का जवाब देते हुए विनोबा जी ने कहा—'इससे अधिक असर डालने वाला और कोई उपाय नहीं है। मेरा तरीका सबसे आसान है। मैं भूमि मांगता हूँ, यह मुझे मिलती है और मैं इसे दूसरों को दे देता हूँ। इस प्रकार देने वाले और लेने वाले में प्रेम और सद्भावना बनी रहती है। वे आत्मा के सम्बन्ध को अनुभव करते हैं।

कांग्रेस सहित भारत का प्रत्येक दल, चाहे उनकी राजनीतिक विचारधारा कैसी ही हो, विनोबा जी के इस आन्दोलन का समर्थन करता है। जिन्हें अहिंसा में विश्वास नहीं
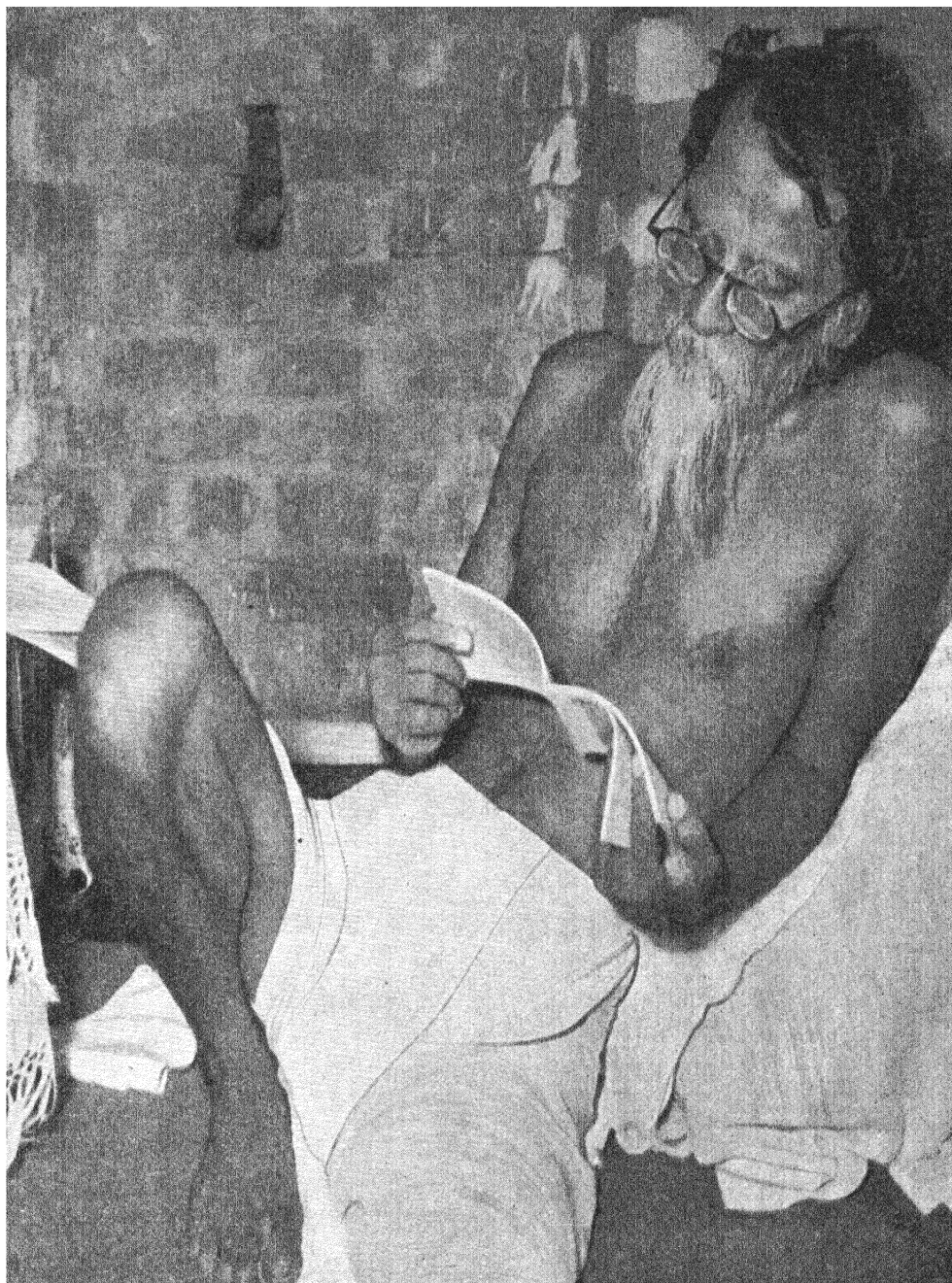
एक रिपोर्ट पढ़ रहे हैं

है, वे भी इस मनुष्य को और इसके उद्देश्य को बुरा नहीं कहते किन्तु उनके इस तरीके के कारगर होने में सन्देह करते हैं।

भूदान यज्ञ भारत की पेचीदा कृषि-समस्या का अपने आप में कोई पूरा हल नहीं है। तथापि इसने करोड़ों लोगों के हृदय में एक नई चेतना और एक नई आशा पैदा की है। विनोबा जी ने एक बार कहा—'मेरा उद्देश्य एक साथ तीन प्रकार की क्रान्ति लाना है। पहले मैं लोगों का हृदय-परिवर्तन चाहता हूँ, दूसरे मैं उनके जीवन में परिवर्तन लाना चाहता हूँ और तीसरे मैं समाज की रचना को ही बदल देना चाहता हूँ।' उन्होंने समझाया—'मेरा उद्देश्य क्रान्ति को रोकना नहीं है। मैं हिंसक क्रान्ति को रोक कर अहिंसक क्रान्ति लाना चाहता हूँ। इस देश की भावी शान्ति और समृद्धि यहां की भूमि-समस्या के शान्तिपूर्ण हल पर ही आश्रित है।'

भूदान आन्दोलन का मूल सिद्धान्त यही है कि धरती के सब पुत्रों का धरती माता के प्रति बराबर का अधिकार है। इसलिए यह आवश्यक है कि देश की सारी भूमि का न्यायपूर्वक फिर से बँटवारा किया जाये और प्रत्येक परिवार को कम-से-कम एक एकड़ सिंचाई की सुविधा वाली ज़मीन या ५ एकड़ सिंचाई की सुविधा रहित ज़मीन दी जाये।

इस प्रकार का मनोवैज्ञानिक परिवर्तन हिंसा द्वारा नहीं लाया जा सकता। विनोबा जी का यह निश्चित मत है कि ज़बरदस्ती दबाव डाल कर कोई काम नहीं कराया जा सकता। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है 'यदि ज़बरदस्ती काम करवाना है तो मेरी कोई ज़रूरत नहीं है उसके साथ मेरी शारीरिक कमज़ोरी का कोई मेल नहीं है।'

विनोबा जी के कहने के अनुसार वर्ग-विरोध और वर्ग-विशेष के प्रति घृणा की भावना ईश्वर की आज्ञा के विपरीत है। सामाजिक न्याय और मानव व्यक्तित्व का विकास परस्पर-विरोधी नहीं है। 'घृणा की अपेक्षा प्रेम अधिक बलवान् है। मिल-जुल कर रहना अधिक प्राकृतिक है। संकल्प पहाड़ को भी हिला सकता है। समय ने प्रमाणित कर दिया है कि मानवीय समस्याओं का हल करने में अन्य हथियारों की अपेक्षा सत्य और अहिंसा अधिक शक्तिशाली हैं। अच्छे या बुरे साधनों का उपयोग ही परिणाम की अच्छाई या बुराई का कारण होता है। बुरे साधनों से भला परिणाम कभी नहीं प्राप्त किया जा सकता।

आचार्य जी का कथन है—'यदि भारत में प्रजातन्त्र को जीवित रखना है तथा शान्तिपूर्ण साधनों द्वारा सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति लानी है तो हमें सच्चे प्रेम, आत्म-बलिदान, सहकारी कार्यप्रणाली और नैतिक पवित्रता का वातावरण पैदा करना होगा।'

जिनके पास जमीन आवश्यकता से अधिक है उनसे अपील करते हुए विनोबा जी कहते हैं—'मैं प्रेम से तुम्हें लूटने आया हूँ। यदि तुम्हारे ५ लड़के हैं तो मुझे अपना छठा लड़का समझो और इस प्रकार मेरा हिस्सा मुझे दरिद्रनारायण के लिए दो।' भूमिहीन ग़रीब मज़दूरों और काश्तकारों को विश्वास दिलाते हुए उन्होंने कहा—'हम सब

एक ही मानव-परिवार के सदस्य हैं।' मनुष्यों की अच्छी भावनाओं को जगाने के लिए की गई विनोबा जी की पुकार ने आश्चर्यजनक परिणाम पैदा किये हैं और कर रही है। वे अपने विरोधियों के प्रति भी, जो उनके सिद्धान्तों और तरीकों का विरोध करते हैं, बड़े दयालु हैं। वे कहते हैं—'यद्यपि साम्यवादी हिंसा का प्रयोग करते हैं तथापि हम उनसे घृणा कैसे कर सकते हैं? मैं चाहता हूँ हर एक मनुष्य ईश्वर में विश्वास करे। मेरी भगवान् से विनय है कि वह प्रत्येक मानव के हृदय में विश्वास की ज्योति जगाये।' साम्यवादियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने एक बार कहा—'क्या आप लोग सचमुच अपने सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं? यदि ऐसा है तो क्यों नहीं दिन में सामने आकर काम करते? यदि आप लोगों को लूटना चाहते हैं तो मेरी तरह प्रेम और सद्भावना से लूटिये।'

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के साथ विनोबा जी

यह बात ध्यान देने योग्य है कि 'भूदान' का अर्थ है अपनी इच्छा से भूमि का दान अर्थात् दूसरों के साथ मिलकर उसका उपयोग करना। यह दूसरों को इस भावना से दी जाती है कि देने वाले के पास जो वस्तु है उसका उपयोग दूसरों के साथ मिलकर किया जा सकता है और किया जाना चाहिये।

कुछ लोगों का यह तर्क है कि भूमि के इस प्रकार के विभाजन से इस देश की ज़मीन और भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जायगी। उन्हें डर है इसका हमारी खेती की उपज पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। विनोबा जी का कहना यह है—'ज़मीन के टुकड़ों में बँट जाने की अपेक्षा लोगों के दिलों में फूट पड़ जाने पर ख़तरे का डर अधिक है। छोटे-छोटे ज़मीन के टुकड़ों को आपसी सद्भावना और सहयोग से फिर एकत्रित किया जा सकता है परन्तु आर्थिक असमानता के कारण दिलों में पड़ी फूट के तो बहुत भयंकर परिणाम हो सकते हैं।' इसलिये सच्चे प्रेम और बलिदान की भावना द्वारा वे कटुता को दूर करना चाहते हैं।

विनोबा जी की सम्मति है कि भारत जैसे घनी अबादी वाले उपमहाद्वीप में छोटे परिमाण में की जाने वाली खेती का प्रयोग ही अधिक ठीक है। भूमि की चकबन्दी करने की अपेक्षा खेती के जोतने, बोने और काटने जैसे बड़े-बड़े कामों में सहकारी प्रणाली के प्रयोग किये जाने की ओर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। दूसरे शब्दों में सामूहिक संयुक्त कृषि व्यवस्था के स्थान पर हमें 'सहकारी प्रणाली द्वारा की जाने वाली अधिक अच्छी खेती' को प्रोत्साहन देना चाहिये।

भूमिहीन मज़दूरों में बेकारी को कम करने के लिए तथा ज़मीन के लिए उनकी उचित मांग को पूरा करने के लिए बड़े परिमाण में भूमि का फिर से बँटवारा किया जाना आवश्यक है। विनोबा जी का भूदान-यज्ञ बग़ैर मुआवजा दिये सद्भावना के साथ धनी ज़मींदारों द्वारा ग़रीब किसानों को ज़मीन दिये जाने के लिए उचित वातावरण का निर्माण कर रहा है। इस यज्ञ का प्रभाव बहुत व्यापक होगा। विनोबा जी का आन्दोलन इतिहास में असत के विरुद्ध सत् की, हिंसा के विरुद्ध अहिंसा की तथा पागलपन, घृणा और विनाश के प्रति शान्तिपूर्ण रचनात्मक शक्तियों की इस बड़ी लड़ाई का एक सीमाचिन्ह बनकर रहेगा।

शायद विनोबा जी अपने भूदान आन्दोलन द्वारा जीवन में प्रचलित मान्यताओं में एक परिवर्तन ला रहे हैं। जिन लोगों ने उनका कार्य देखा है और उस भावना का अनुभव किया है जो इस सब के मूल में है, उन्हें विनोबा जी के आन्दोलन के क्रान्तिकारी रूप के विषय में जरा भी शंका नहीं हो सकती। वे सदा इस विचार का प्रचार करते हैं कि भूमि को अपनी सम्पत्ति मान बैठना गलत है, वह भी हवा और पानी की तरह सबके लिए है। जिस प्रकार समाज के प्रयोग के लिए पानी की व्यवस्था की जाती है इसी प्रकार भूमि का भी समाज के भले के लिये उपयोग होना चाहिये। सारी सम्पत्ति का समाज

गान्धी नगर (जयपुर) की सामूहिक कताई में भाग लेते हुए

के भले के लिए एक पवित्र धरोहर के रूप में प्रयोग होना चाहिए—इस सिद्धान्त का प्रचार करके विनोबा जी गांधी जी की उन मान्यताओं की रक्षा करने का यत्न कर रहे हैं जिनके विनाश का खतरा उपस्थित है।

राजनीतिक सहायता के बिना भी व्यक्तित्व और चरित्र द्वारा कितना सामाजिक भला किया जा सकता है, यह विनोबा जी ने दिखा दिया है। जिस उपाय से वे भूमि समस्या को हल करने में लगे हुए हैं उससे स्पष्ट है कि समझाने बुझाने के द्वारा यहां की दूसरी समस्याएं भी सुलझाई जा सकती हैं। जमींदारी के विरुद्ध वे जनता की आवाज़ को इतना बुलन्द कर रहे हैं कि सरकार के लिए राजनीतिक और कानूनी कार्यवाही करना बहुत आसान हो जायेगा। आचार्य जी देहातों में कार्यकर्ताओं की एक सेना संगठित करने में लगे हुए हैं जिसकी सम्मिलित कार्यवाही उस इलाके में एक नयी क्रान्ति ला देगी।

बोधगया के सर्वोदय सम्मेलन का एक दृश्य

इस प्रकार गांवों में एक शान्तिपूर्ण क्रान्ति हो रही है। इसके महान् परिणाम अभी कल्पना के विषय नहीं है। फिर भी यह सवाल प्रायः उठाया जाता है कि क्या भूदान-यज्ञ से भूमि-समस्या पूरी तरह हल हो जायेगी? निश्चय से कोई भी क्रांन्ति प्रथम प्रयास में उन सब समस्याओं को हल नहीं कर सकती, जिन्होंने उसे जन्म दिया है। क्रान्ति पहले तो उन मनोवैज्ञानिक और नैतिक बाधाओं को दूर करती है जो नये समाधान के मार्ग में रुकावट होती हैं। इन बाधाओं के हट जाने के बाद यथायोग्य कानूनी, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं द्वारा नई मान्यताओं की स्थापना का काम प्रारम्भ होता है। विनोबा जी के भूदान-यज्ञ पर इस दृष्टि से ही विचार किया जाना चाहिए।

कृषि-योग्य भूसम्पत्ति पर सामाजिक स्वामित्व के सिद्धान्त का प्रचार करके क्या विनोबा जी हमारे संविधान की भावना के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं? ऐसा प्रश्न उठना

स्वाभाविक है। इस विषय में प्रश्न किये जाने पर विनोबा जी का उत्तर स्पष्ट था। 'मेरा प्रयत्न ऐसा वातावरण बनाने का है जिसमें संविधान की सीमाओं से, यदि कुछ हों तो, छुटकारा प्राप्त किया सके।'

विनोबा जी सब प्रकार के कानूनों के विरुद्ध नहीं हैं। उन्होंने एक बार कहा—'मेरी योजना भी अन्त में कानून की आवश्यकता स्वीकार करती है परन्तु काम का प्रारम्भ मैं प्रेम और दया से करना चाहता हूँ।' उनका जोर इस बात पर है कि—'लोगों पर कानून थोपा नहीं जाये। जमींदार सहित प्रत्येक आदमी कानून के पास होने पर अपनी इच्छा से उसे माने।' विनोबा जी यह नहीं मानते कि अहिंसा और कानून परस्पर विरोधी हैं और उनका प्रयोग साथ-साथ नहीं हो सकता। उन्होंने एक सभा में कहा था—'अहिंसा कानून की ज़रूरत को अस्वीकार नहीं करती किन्तु कानून को जनता का समर्थन अवश्य प्राप्त होना चाहिए।' जनता का समर्थन मिलना तभी सम्भव है जब कि उपयुक्त वातावरण बना दिया जाये। अपनी बात को समझाते हुए एक बार विनोबा जी ने कहा—'यदि जमींदार लोग भूमि के लिए भूमिहीनों का अधिकार स्वीकार कर लें तो उपयुक्त कानून बनाने के लिए उचित वातावरण पहले ही बन चुका होगा।'

विदेशों में और भारत में भी बहुत से व्यक्ति विनोबा जी पर साम्यवादी होने का सन्देह करते हैं। यह प्रश्न किये जाने पर कि क्या वे साम्यवाद की आवश्यकता को महसूस करते हैं उन्होंने जवाब दिया—'मैं साम्यवाद में नहीं 'साम्ययोग' (समानता का व्यवहार) में विश्वास करता हूँ और इसकी आवश्यकता भी महसूस करता हूँ।' विनोबा जी का मत है कि साम्यवाद की विचारधारा का एकमात्र प्रभावोत्पादक विकल्प साम्ययोग ही हो सकता है और यह बहुत समय से हमारे देश में है। साम्ययोग का उद्देश्य सबका कल्याण है। इसके मूल में बलप्रयोग और हिंसा नहीं होती। साम्ययोग का आधार समझा-बुझा कर तथा नैतिक प्रेरणा द्वारा किया गया हृदयपरिवर्तन है। भूमिसमस्या के क्षेत्र में भूदान-यज्ञ अहिंसा और प्रेम द्वारा भूमिहीनों के लिए भूमि प्राप्त करने के उद्देश्य से की जानेवाली शान्तिपूर्ण क्रान्ति लाने का एक प्रभावपूर्ण साधन है। भूदान-यज्ञ मानव सम्बन्धों में विद्यमान असमानताओं और अन्याय को दूर करने में साम्ययोग की प्रभावोत्पादकता को प्रमाणित करता है। विनोबा जी का कथन है 'समानता का व्यवहार या इसे लाने के लिए उद्योग करना समानता के नारे लगाने और खून बहाने की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा है।' हिंसा, वर्ग-विद्वेष और वर्ग-संघर्ष की विदेशी विचारधारा के अन्धानुयायियों को विनोबा जी के इस युग-निर्माणकारी परीक्षण के महत्त्व को समझना चाहिए और इस समस्या को हल करने के लिए अन्य दलों की तरह अपना पूरा सहयोग देना चाहिये। अपनी एक प्रार्थना सभा में विनोबा जी ने ठीक ही कहा था—'लोग मुझे रूस में स्वर्ग होने की बात कहते हैं। मेरा उनसे यही कहना है कि वहां जो कुछ हुआ है

उसके विषय में अभी कुछ कहना बहुत उतावलापन होगा। साथ ही मैं इतना और जोड़ दूं कि यदि हिंसा ने वहां के लोगों की इतनी बड़ी सेवा की है तो निश्चय ही अहिंसा मानवता की इससे बड़ी और बहुत बड़ी सेवा कर सकती है।'

विनोबा जी की आलोचना करनेवाले यह आक्षेप करते हैं कि दान में दी गई ज़मीन प्रायः ऊसर, पथरीली, खेती के अयोग्य और अच्छी नहीं होती। इसके उत्तर में विनोबा जी का कहना है 'मेरी सम्मति में ज़मीन का कोई भी टुकड़ा व्यर्थ नहीं है। मैं तो ख़राब से ख़राब ज़मीन से भी यहां तक की कंकरीली और पथरीली ज़मीन से भी पूरा फ़ायदा उठाऊंगा।' भूमि के अधिक उपजाऊ होने की अपेक्षा विनोबा जी इस बात को अधिक महत्त्व देते हैं कि लोग एक सामाजिक काम के लिए अपनी इच्छा से अपनी सम्पत्ति में से कुछ हिस्सा देने को तैयार हैं। उनके विचार से इस घटना में एक शक्तिशाली क्रान्ति बीज रूप में विद्यमान है। इस आन्दोलन के नैतिक और मनोवैज्ञानिक मूल्य के अतिरिक्त, कम उपजाऊ ज़मीन शरणार्थियों को बसाने, चरागाह बनाने, वन लगाने तथा ऐसे ही अन्य कामों में लायी जा सकती है। इस बात की ओर ध्यान खींचते हुए विनोबा जी ने कहा—'यह कुछ विचित्र सी बात है कि कम उपजाऊ ज़मीन का अधिक हिस्सा

भूदान के लिए अपील करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण
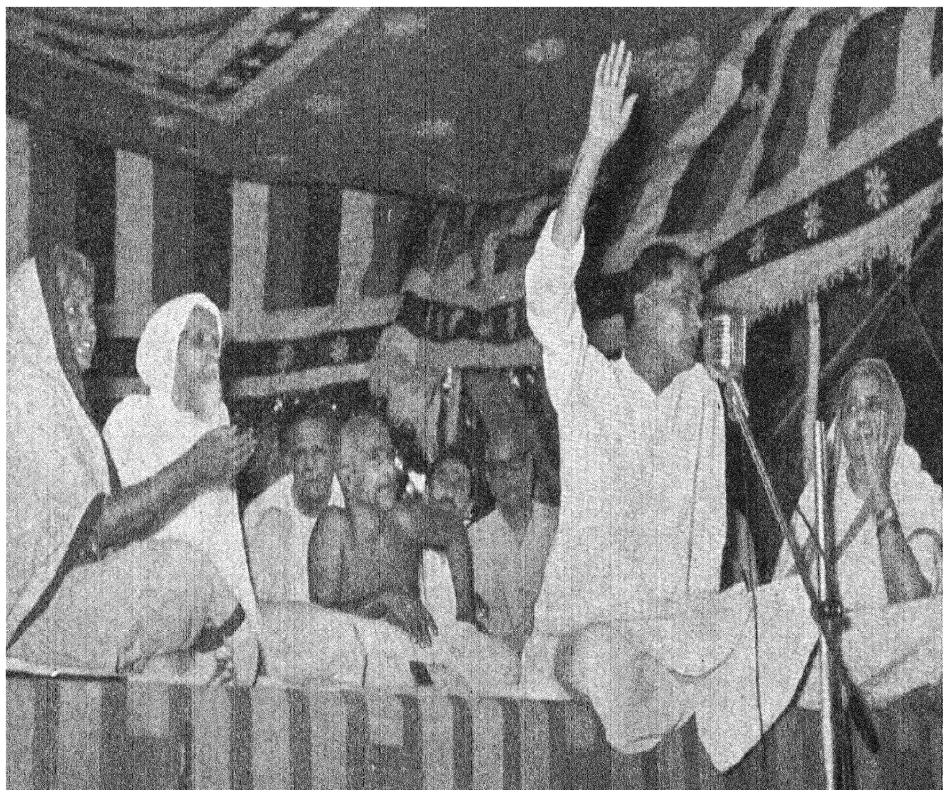
धनी लोगों ने दान दिया है ग़रीबों ने नहीं। कैसी अचरज की बात है कि ईश्वर ने ग़रीबों के दिल विशाल और धनियों के दिल कंजूस बनाये हैं।'

भारत के उप-राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने भूदान-यज्ञ के लिए कहा कि यह एक ऐसा आन्दोलन है जो 'जनता के मन को एक ज़ोरदार सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति के लिए तैयार कर रहा है—यह क्रान्ति बलपूर्वक नहीं अपितु उनकी स्वीकृति से लायी जा रही है।'

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण का, जिन्होंने अपना सारा जीवन भू-दान यज्ञ के लिये लगा दिया है, विचार है कि विनोबा जी का 'यह आन्दोलन एक 'हिंसारहित' सामाजिक तथा आर्थिक क्रान्ति का महान् परीक्षण है।'

पिछले तीन सालों में विनोबा जी ने १०,००० मील की पैदल यात्रा करके ३,४५,३२१ दानियों से ३४,६६,४६२ एकड़ ज़मीन भूमिहीन गरीबों को देने के लिए इकट्ठी की है।

इतना महान् काम करने के बाद भी विनोबा जी नम्रता से कहते हैं कि वे कोई नया काम नहीं कर रहे हैं। वे एक सच्चे अन्वेषक हैं जो अपने गुरु के चरणचिन्हों पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं। दूसरे महान् अनुयायियों के समान वे भी अपने गुरु के संदेश को सरलता से लोगों की समझ में आने योग्य तथा समृद्ध बना कर प्रभावोत्पादक रूप में उपस्थित कर रहे हैं तथा जड़ और प्रेरणा रहित सूत्रों का समूह मात्र रह जाने से उसका बचाव कर रहे हैं।'

दान में मिली ज़मीन का बँटवारा

विनोबा जी का भूमि संग्रह का तरीका ही नया नहीं है किन्तु भूमिहीनों में उसे फिर से बाँटने का उनका तरीका और अधिक क्रान्तिकारी है। पुनर्वितरण के लिए आई हुई भूमि का एक तिहाई भाग भूमिहीन लोगों में सबसे अधिक ग़रीब और पद-दलित हरिजनों को दिया जाता है। किन्तु चाहे वे हरिजन हों या भूमिहीन लोगों की किसी दूसरी श्रेणी में आते हों उन्हें ये चार शर्तें जरूर पूरी करनी चाहिएं।

(१) भूमिहीनता, (३) ज़मीन जोतने की योग्यता तथा

(२) ग़रीबी, (४) ज़मीन का मालिक बनने और उसकी देखभाल की इच्छा

ज़मीन का बँटवारा करते समय पहला मौका उन लोगों को दिया जाता है जो इन शर्तों को पूरा करते हों। ज़मीन का बँटवारा गांवों की आम सभा में किया जाता है। सब शर्तें जनता के सामने जांची जाती हैं। वहाँ विनोबा जी का एक अनुयायी भी होता है। जनता की सभा में बँटवारे सम्बन्धी निर्णयों के खुले आम होने के कारण उनका सब की सहमति से होना निश्चित है। दो या अधिक व्यक्तियों में यदि शर्तें बराबर घटती हों तो 'टॉस' द्वारा निर्णय किया जाता है क्योंकि 'टॉस' भगवान् का निर्णय माना जाता है। भूमिहीनों के लिए ज़मीन प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त किये गये प्रेम और भाई चारे के उपाय को उसके ठीक-ठीक बँटवारे के लिए भी जरूर काम में लाया जायेगा। भारत के

अधिकांश गाँवों में विद्यमान गाँवों की पंचायतों का सहयोग न केवल ज़मीन के बँटवारे के लिए किन्तु ज़मीन प्राप्त करनेवालों की सहायता के लिए भी किया जाता है जिससे अपने हिस्से में मिली हुई जमीन पर वे खेती प्रारम्भ कर सकें।

विनोबा जी द्वारा इकट्ठी की गई भूमि का बँटवारा अभी तक सारे राज्यों में शुरू नहीं हुआ है। हैदराबाद और उत्तर-प्रदेश में बँटवारे का काम कुछ हद तक आगे बढ़ गया है। लेकिन बिहार में तो यह अभी शुरू होना है। उत्तर प्रदेश में जब पहली बार ज़मीन वितरित की गई तो वह दृश्य बड़ा हृदयस्पर्शी था। १२ परिवारों के लोगों ने विनोबा जी की चरणरज मस्तक पर चढ़ाई जिनके आन्दोलन ने उनके लिए जीवन का एक नया मार्ग खोल दिया।

उत्तर प्रदेश के पुखरियां गांव में ऐसा हुआ कि वहां भूमिहीन सात परिवार थे परन्तु ज़मीन केवल २ परिवारों में बाँटे जाने लायक थी। सब उपस्थित लोगों से विनोबा जी ने मर्मस्पर्शी अपील की। लोगों पर इसका गहरा प्रभाव हुआ और उन्होंने सातों परिवारों को पूरी पड़ सके इतनी भूमि दान में दी।

इस अवसर पर बोलते हुए विनोबा जी ने कहा—'मेरे साथ सहानुभूति रखनेवाले लोगों को भी मेरे उद्देश्य की सफलता में बहुत थोड़ी आशा थी। मेरी आंखों के सामने जो दृश्य है उसके लिए मेरे मन में थोड़ी सी भी शंका नहीं रही। और ऐसा इसलिए था क्योंकि मां गीता ने मुझे बिना आसक्ति के अपने कर्त्तव्य का पालन करना सिखाया है। इसके बिना मैं पहली ही असफलता से घबरा कर लौट जाता और अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए विधान सभाओं का मुंह ताकता। सौभाग्य से एक बन्धन रहित मनुष्य की तरह मुझे अपने प्रयत्नों के परिणाम के प्रति कोई उत्सुकता नहीं थी।'

भू-दान कार्यकर्ताओं के बीच में

तीसरा अध्याय
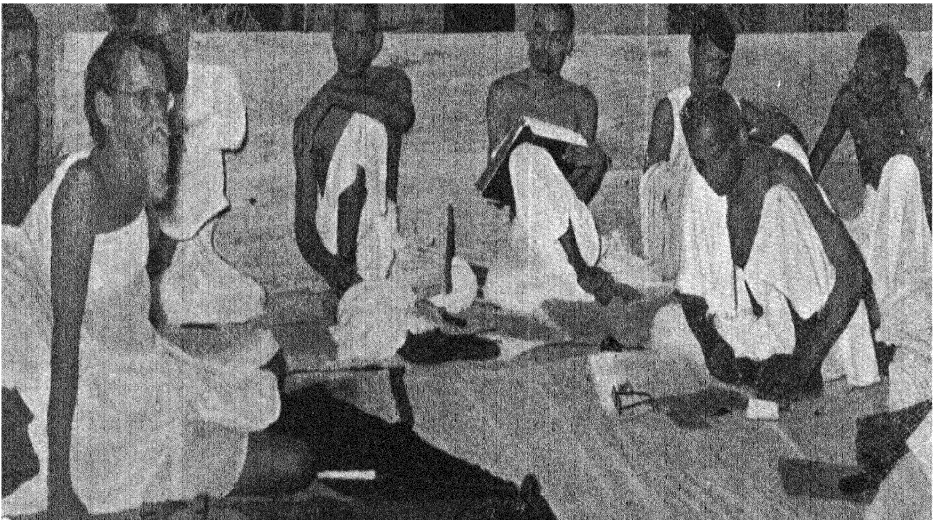
आन्दोलन के प्राण

इस आन्दोलन को कौन चला रहा है? यह कैसा दार्शनिक सिद्धान्त है जो अमीरों को ग़रीब बनाये बिना गरीबों को अमीर बनाने का प्रतिपादन करता है? क्या वह मनुष्य किसी शुभ घड़ी में पैदा हुआ था? नहीं! भारत के करोड़ों नर नारियों में विनोबा नाम से प्रसिद्ध विनायक नरहरि भावे ऐसा कोई दावा नहीं करते।

विनोबा जी गांधी जी के अत्यन्त सच्चे और विश्वासपात्र शिष्यों में से एक थे। उनका सादा वेश, दुबला-पतला शरीर, दोहरे शीशेवाली ऐनक और कोमल वाणी हमें बापू की याद दिलाते हैं। यद्यपि वे भारत के अग्रगण्य विद्वानों में से एक हैं पर उनको यह महत्त्व उनकी विद्वत्ता के कारण नहीं मिला है। विनोबा जी जनता के प्यारे बापू जी की तरह उनके लिए नई आशा और नये जीवन की प्रेरणा लेकर आये हैं।

निवृत्ति, ज्ञानदेव, रामदास, एकनाथ और तुकाराम जैसे साधु महात्माओं की तथा शिवाजी और बाल गंगाधर तिलक जैसे योद्धा और राजनीतिज्ञों को जन्म देनेवाली पुण्य-भूमि में विनोबा जी का जन्म हुआ। उनकी माता का नाम रुक्मिणी देवी और पिता का नाम नरहरि था। इनका जन्म ११ सितम्बर १८९५ में हुआ और अपने ४ भाई और १ बहन में ये सबसे बड़े हैं। महाराष्ट्र के कोलाबा जिले की पेन तहसील के गगोडा ग्राम में रहनेवाले भावे परिवार के लोग समृद्ध ब्राह्मण थे। विनोबा जी के पिता नरहरि भावे ने महाराजा गायकवाड के 'कला भवन' से रंगसाजी में डिप्लोमा प्राप्त किया और कुछ समय तक वे बकिंघाम मिल के रंगाई विभाग में काम करते रहे। 'ब्रिटिश खाकी' 'कला भवन' की ही देन है। अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के विचार से नरहरि भावे बकिंघाम मिल की इस नौकरी को छोड़ कर बड़ौदा चले गये। वहां उन्होंने राज्य सरकार के एक टाइपिस्ट क्लर्क के रूप में काम किया। नरहरि आधुनिक दृष्टिकोण रखनेवाले व्यक्ति थे और औद्योगिक शिक्षा के बड़े पक्षपाती थे।
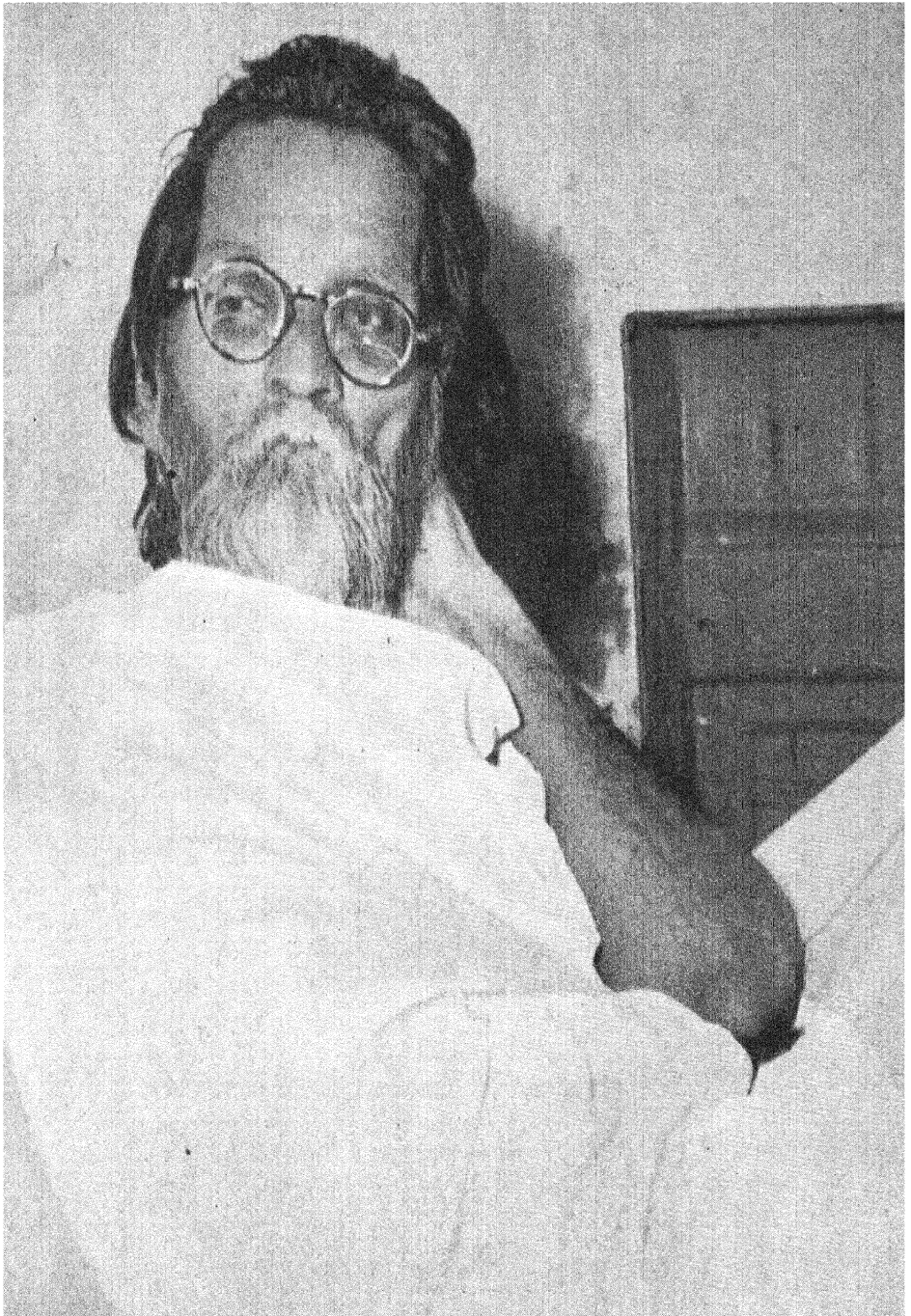
विनोबा जी के सबसे छोटे भाई की बचपन में ही मृत्यु हो गई थी। दूसरे भाई बालकृष्ण भावे गांधी जी द्वारा उरलीकांचन में खोले गये प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के व्यवस्थापक थे। अब वे दक्षिण अफ्रीका के एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में हैं। तीसरे भाई शिवाजी भावे; जो इतिहास और संस्कृत के बड़े विद्वान् हैं पहले तो धूलिया में रहते थे किन्तु अब पवनार में विनोबा जी के परमधाम आश्रम की देखभाल करते हैं।

विनोबा जी पर इनकी माता का अत्यन्त स्नेह था। बचपन में अपनी माता के भक्तिपूर्ण भजनों को सुन कर इन्हें बहुत आनन्द होता था। हृदय में भगवान् का ध्यान करते हुए और मुख से उनके नाम को जपते हुए वे जो कुछ करती थीं उसे भगवान् के अर्पण कर देती थीं। ऐसा प्रसिद्ध है कि अपने पड़ौसियों को पहले खिलाये बिना वे कुछ नहीं खाती थीं; और पड़ौसियों को बाँटने का काम उनके प्यारे पुत्र 'विन्या' पर था। वे स्नेहवश विनोबा जी को इसी नाम से पुकारती थीं।

१९०५ में विनोबा जी स्कूल में प्रविष्ट हुए। स्कूल में वे कभी समय व्यर्थ नहीं खोते थे। छठी श्रेणी तक वे सदा सर्वप्रथम रहे। उसके बाद उन्हें स्कूल की पढ़ाई में रुचि नहीं रही फिर भी वे परीक्षाएं पास करते गये। साथ-साथ उनके ज्ञान का भण्डार भी बढ़ता गया। अपने स्वाध्याय के लिए वे सदा अच्छी पुस्तकें चुनते थे। क्षण-क्षण में बदलनेवाली बातों की अपेक्षा उन्हें स्थिर रहनेवाली बातों से अधिक प्रेरणा मिलती थी। गणित और दर्शन इनके प्रिय विषय थे। गणित के विषय में उन्होंने लिखा है 'ईश्वर के बाद यदि मैं किसी वस्तु से प्यार करता हूँ तो वह गणित है। गणित के लिए मेरी इतनी उत्कण्ठा थी कि मैं तो सवाल हल करने में लगा रहता था और पास में घंटों तक मेरा भोजन पड़ा रहता था। गणित में मेरी अद्भुत प्रतिभा थी। ऐसे कठिन प्रश्नों को भी मैं आसानी से हल कर लेता था जिनको हल करने में मेरे अध्यापक भी असफल रहते थे।' उनके प्रत्येक विचार और क्रिया में गणित की सी सूक्ष्मता है।

विनोबा जी ने अपने एक अनुयायी को बताया, 'जब मैं ९ वर्ष का था तो लोकमान्य तिलक के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'केसरी' को पढ़ने में मेरी उत्कट रुचि हो गई। हर प्रकार के विषय पर मैं इसमें लेख पढ़ा करता था और वस्तुतः मेरे सम्पूर्ण अध्ययन की नींव यहीं से पड़ी है। मैंने 'दासबोध' प्राप्त किया और उसे बार-बार पढ़ा। तुकाराम, मोरोपन्त, एकनाथ, और ज्ञानेश्वर आदि महात्माओं से मैं पहले ही परिचित था। मैंने उनके ग्रन्थों को बार-बार पढ़ कर उनके विषय को अच्छी प्रकार समझ लिया था।

उन्होंने अपनी समान आयुवाले छात्रों की एक सभा बनाई और उसका नाम 'विद्यार्थी मण्डल' रक्खा। जो कुछ वे पढ़ते थे उस पर वहां वादविवाद होता था। अध्ययन और विचार विमर्श की यह पद्धति विनोबा जी में बाहर से न दीख पड़नेवाली क्रान्ति ला रही थी।

बाद में विनोबा जी ने बताया 'दास बोध' और 'केसरी' ने मुझ पर बहुत गहरी छाप छोड़ी और मैंने अपना जीवन देश को अर्पित कर दिया। मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया कि यदि मैंने विवाह किया तो मैं अपने देश की सेवा न कर सकूंगा। ब्रह्मचर्य का रहस्य तो मुझे और पीछे समझ में आया। मैंने यह निश्चय किया कि पढ़ी हुई बात को अच्छी प्रकार समझे और उस पर आचरण किये बिना कोई बात नहीं पढ़ूंगा। मैंने एक बार यह पढ़ा कि ब्रह्मचारी को नरम बिस्तर पर नहीं सोना चाहिये तथा नहाने के लिए गरम पानी का उपयोग भी नहीं करना चाहिये। इसके बाद मैंने बिस्तर पर सोना छोड़ दिया और ठण्डे पानी से स्नान करने लगा। यह बता सकना बहुत मुश्किल है कि कितनी कठिनता से मैं अपनी माँ से इन बातों के लिए आज्ञा पा सका। उसे बहुत दुःख हुआ। स्नान के लिए वह मुझे ठण्डा पानी देती ही नहीं थी। मैं भी अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। १५ दिन तक मैं बिना नहाये रहा। अन्त में दयालु माता ने अपने हठी बच्चे की ज़िद के सामने झुकना ही अच्छा समझा।'

विनोबा जी ब्रह्मचारी हैं; गांधी जी के साबरमती आश्रम में जाने से पहले ही उन्होंने ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा ले ली थी। उनके लिए ब्रह्मचर्य विवाह के बाद आने वाली आर्थिक कठिनाइयों से बचने का रास्ता या परिवार के भार से मुक्त रहने का कोई नुस्खा नहीं है। विनोबा जी के लिए यह एक आदर्श है या यों कह सकते हैं कि सब अच्छाइयों का मूल है।

पर ब्रह्मचर्य के कारण विनोबा जी ने जीने की ओर जीवन के दूसरे व्यापारों के प्रति अपनी रुचि को कम नहीं किया है। उनके कहने के अनुसार ब्रह्मचर्य का मतलब भीतर की आग को बुझाना नहीं अपितु इसे निरन्तर शाश्वत रूप में अधिक उज्ज्वल बनाकर प्रज्वलित रखना है। अपनी इन्द्रियों की शक्तियों को नष्ट करके पंगु बन जाने और इस प्रकार जीवन के आनन्द से वंचित हो जाने को आत्मसंयम नहीं कह सकते।

विनोबा जी ने लिखा है 'किसी काम के लिए मना करने की बात माँ के साथ तो चल जाती थी पर पिता जी के साथ ऐसा नहीं था। वे मुझे बहुत मारते थे। एक बार हमारे घर में कुछ मेहमान आये हुए थे। उनके लिए सिगरेट लाने को पिता जी ने मुझे कहा। सिगरेट ? सो मैं कैसे ला सकता था; अतः मैं चला गया। कुछ बातों की मेरी धुन ने—जैसे नंगे पैर घूमना, अंग्रेज़ी की अपेक्षा मराठी की ओर अधिक ध्यान देना, बिस्तर पर न सोना—'उनके क्रोध को भड़का दिया था। किन्तु मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा।'

अपने विद्यार्थियों को उन्होंने एक बार बताया कि 'मेरे पिता जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि मैं बैरिस्टर या एक बड़ा कैमिस्ट बनूं। इसके लिए वे मुझे जर्मनी भेजना चाहते थे। आरम्भ में तो मैं इसके योग्य लगता भी था। मैं अपनी श्रेणी में प्रथम रहता था। मैं दिन भर सामान्य मराठी की पुस्तकें पढ़ता था और अपनी कक्षा की तैयारी करने
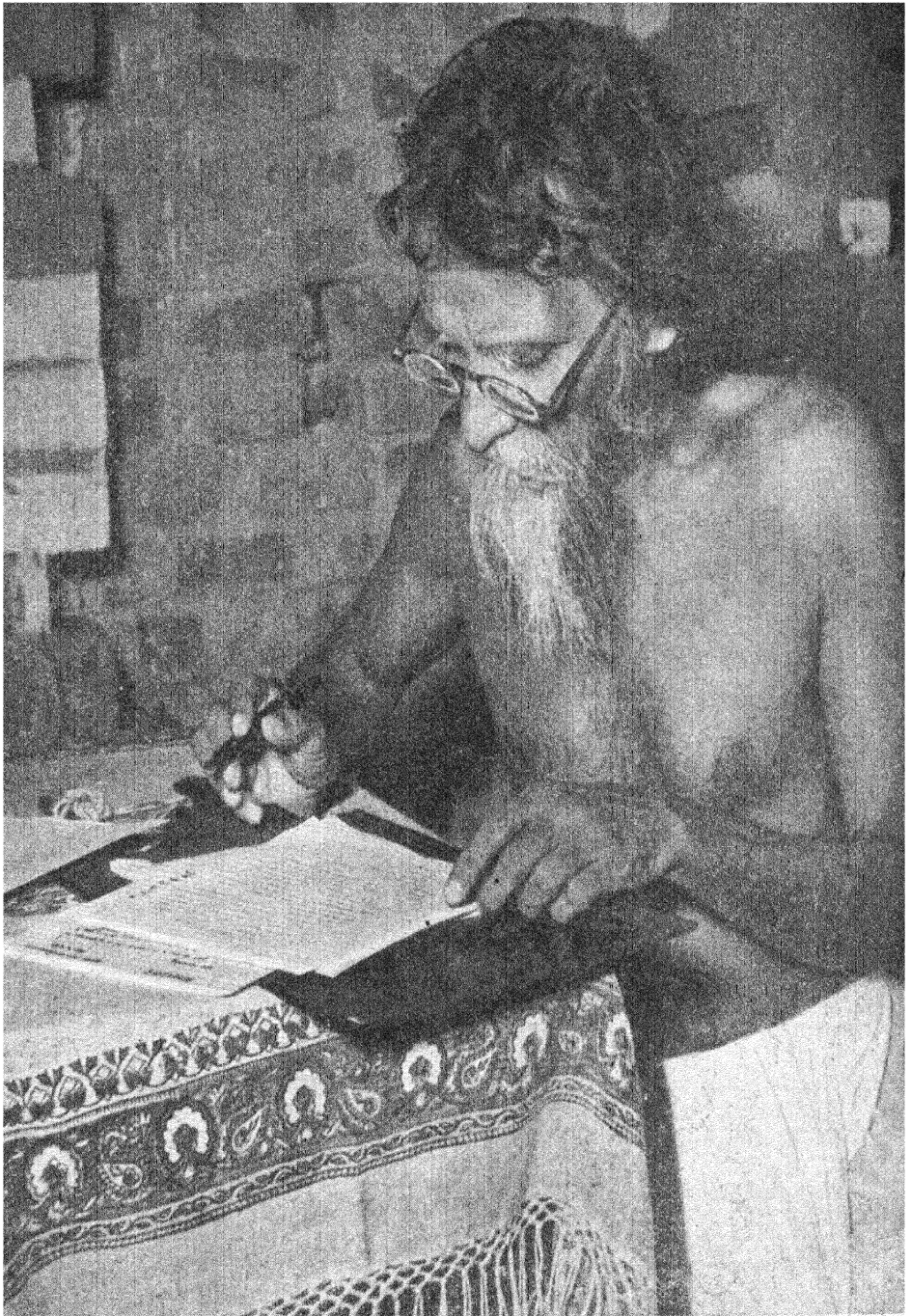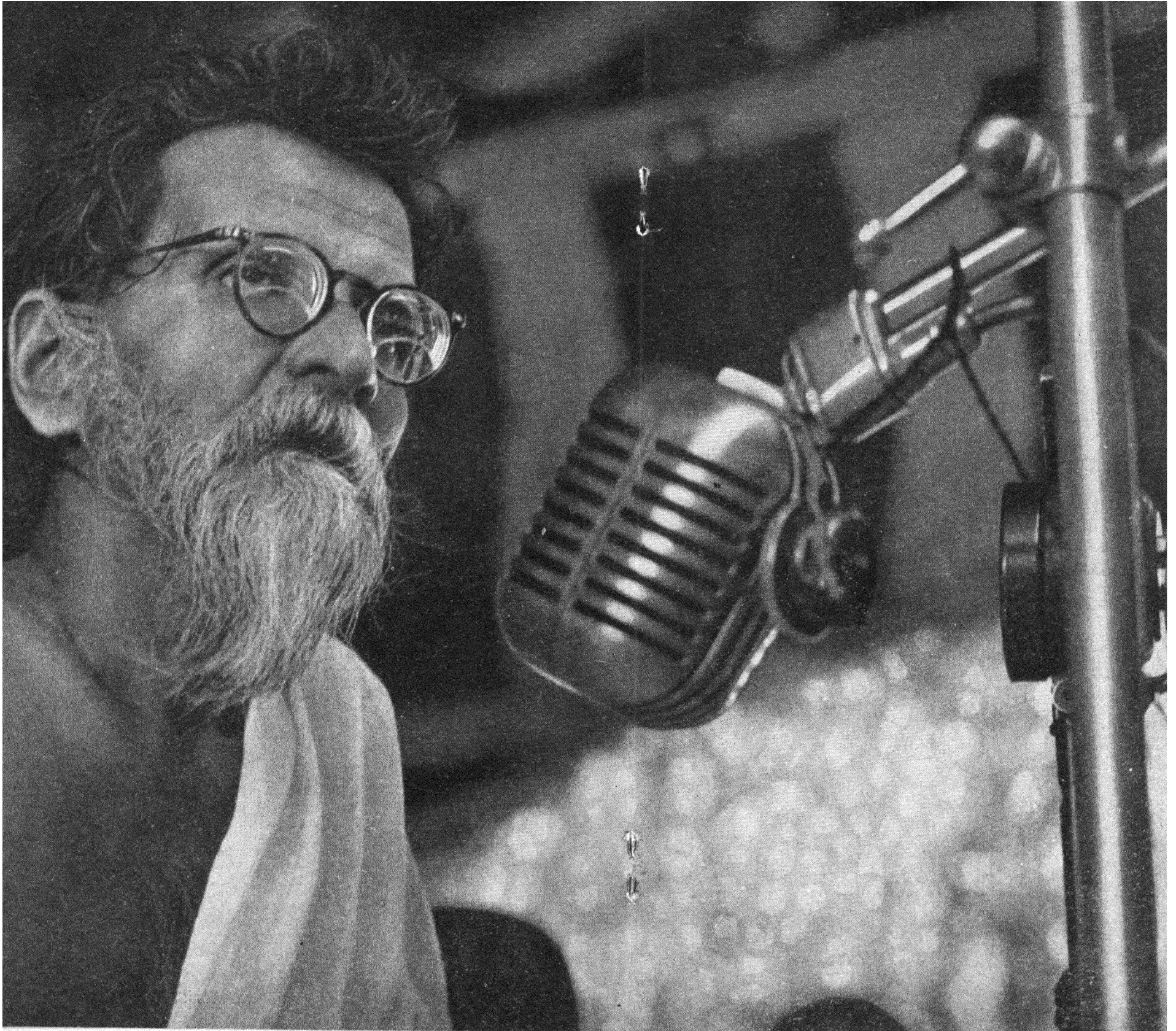
भाषण देते हुए
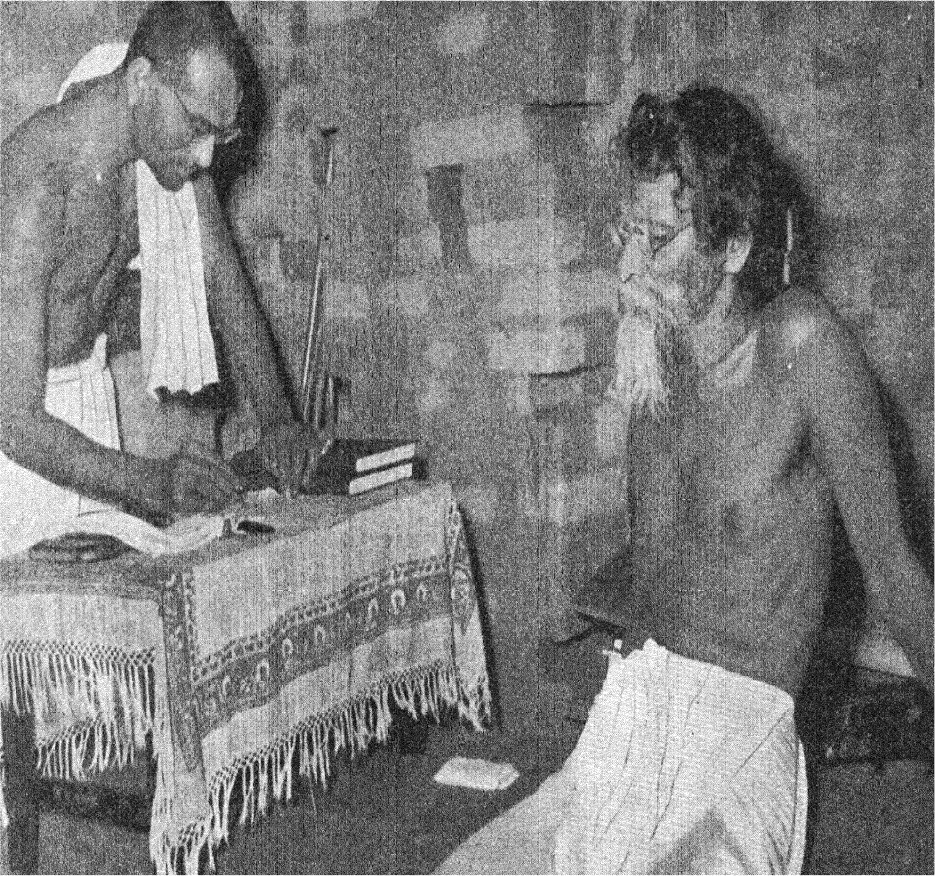
अपने सैक्रेटरी को नोट लिखाते हुए

में बहुत थोड़ा समय लगाता था। पिता जी का विचार था कि वे मेरी इस बुद्धिमानी का पूरा लाभ उठाएं। वे अपने ब्राह्मण होने के कर्तव्य को तो भूल गये और एक वैश्य की तरह हर बात को रुपये पैसे की दृष्टि से सोचने लगे। मुझे यह बात बुरी लगती थी। मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं इस प्रकार अपनी बुद्धिमानी का दुरुपयोग नहीं होने दूँगा।'

बचपन से ही विनोबा जी बहुत अध्ययनशील थे। वे लिखते हैं 'पढ़ते समय और विचार-विमर्श में लगा होने पर मैं सब कुछ भूल जाता था। अपनी बहन की शादी के समय मैं पढ़ाई में लीन था। तभी किसी ने मुझसे मेरे बहनोई का नाम पूछा, मुझे बहुत लज्जित होना पड़ा। मुझे उनका नाम तक नहीं मालूम था।'

अन्त में इनके घर छोड़ने का समय आ गया। विनोबा जी अपने चारों ओर के वातावरण से बहुत क्षुब्ध थे। वे इस सबसे छुटकारा पाना चाहते थे। अपने पिछले संस्मरण सुनाते हुए उन्होंने बताया 'मैं इस शिक्षा-प्रणाली की दास मनोवृत्ति को पहचान चुका था। मैंने अपने पहले के मित्रों का भी साथ छोड़ दिया। मुझे अनुभव हुआ कि वे लोग एक ग़लत शिक्षा के लिए अपने दिन बरबाद कर रहे हैं। मेरी संस्कृत पढ़ने की इच्छा थी पर मुझे फ्रेंच पढ़ाई जा रही थी क्योंकि मेरे पिताजी मुझे विदेश भेजना चाहते थे। मैंने इस सबसे छुटकारा पाने का निश्चय कर लिया।'

उन दिनों वे बड़ौदा में रहते थे। १६१६ में विश्वविद्यालय की परीक्षा का समय आया। उन्हें इन्टरमीडियेट की परीक्षा देने के लिए बम्बई जाना था। विनोबा जी को इस वातावरण से बच निकलने का यह अच्छा अवसर दिखाई दिया। सो वे बम्बई तो गये नहीं और सूरत से गाड़ी बदल कर 'ताप्ती वैली रेलवे' द्वारा बनारस चले गये। इस घटना की चर्चा करते हुए उन्होंने अपने छात्रों को बताया—'इस षड्यन्त्र में मैंने अपने एक दो सहपाठियों को भी शामिल किया। मैंने अपने पिताजी को एक लम्बा पत्र लिखा और बड़ौदा स्टेशन पर मैंने वह पत्र डाक में छोड़ दिया और काशी के लिए चल दिया। बहुत समय बाद सी० आई० डी० द्वारा पिताजी को पता चला कि मैं काशी में हूँ। वे भी मेरी तरह अपनी धुन के पक्के थे। उन्होंने भी मुझे अकेला छोड़ दिया।'

बनारस में विनोबा जी ने संस्कृत की पढ़ाई शुरू की। अपने स्वल्प काल के बनारस निवास में वे संस्कृत के अच्छे विद्वान् हो गये। बनारस में वे एक धर्मशाला में रहते थे, प्रतिदिन गंगा में नहाते थे और भिक्षुक की तरह जीवन निर्वाह करते थे। उन दिनों के जीवन के भयंकर कष्टों के कारण उनके एक साथी का तो प्राणान्त भी हो गया था। इन्हीं दिनों विनोबा जी को पता चला कि गांधी जी ने साबरमती में एक आश्रम खोला है।

१६१६ में विनोबा जी ने गांधी जी के प्रथम दर्शन किये। स्वभाव से बहुत शर्मीले होने के कारण वे गांधी जी से मिले नहीं किन्तु उन्हें पत्र लिखा। गांधी जी ने उन्हें बुलाया और आश्रम में रहने को कहा। कुछ दिन पश्चात् जब गांधी को मालूम हुआ
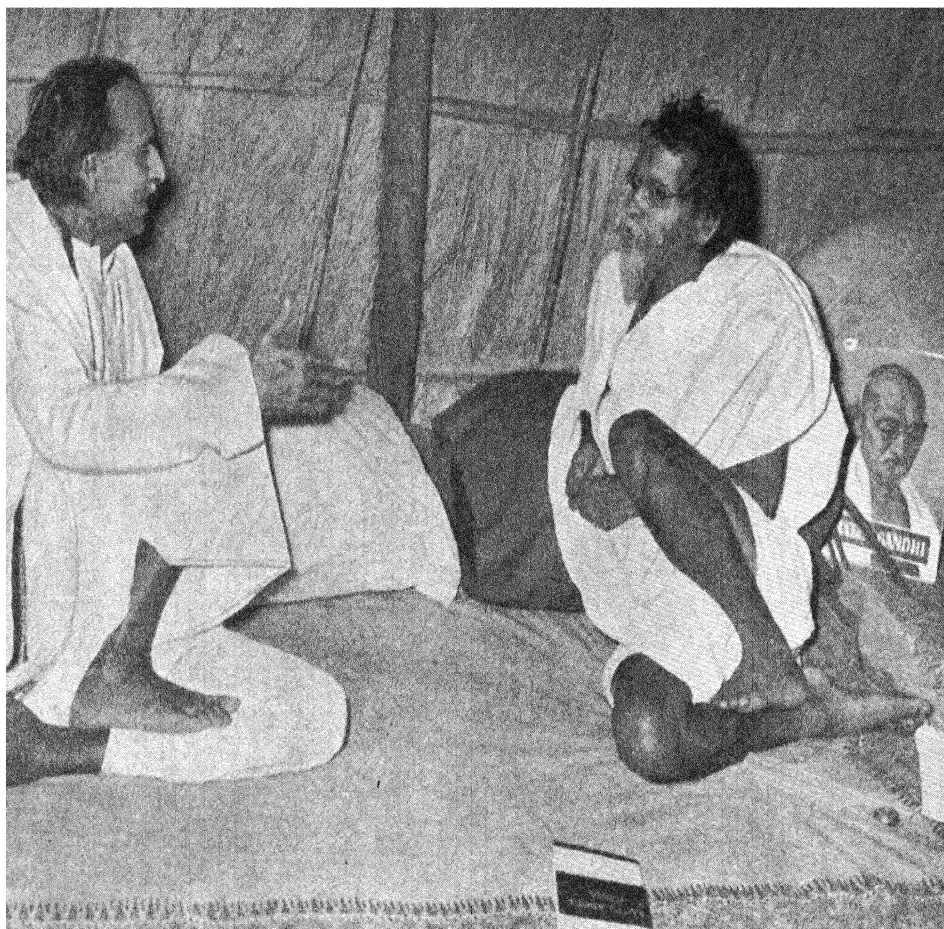
आचार्य कृपलानी और विनोबा जी

कि उनके इस नये शिष्य ने कई वर्षों से अपने घर पत्र तक नहीं भेजा है तो उन्होंने स्वयं विनोबा जी के पिता जी को पत्र लिखा। 'तुम्हारा विनोबा मेरे साथ है। उसका आध्यात्मिक ज्ञान इतना अधिक है कि मैं बहुत संघर्ष के बाद ही उतना प्राप्त कर सकूंगा।'

बचपन से ही विनोबा जी को अपनी माता से बहुत स्नेह था। उन्होंने उनसे बहुत कुछ सीखा था। बहुत अनुराग भरे शब्दों में अपनी माता के विषय में उन्होंने लिखा है। 'दूसरों की तरह मैंने भी एक बार अपनी माँ से कहा: देखो कितना मोटा ताज़ा भिखारी भीख मांगने आया है। इनको भीख देना भिक्षावृत्ति को प्रोत्साहन देना है और अपनी बात के सबूत में मैंने गीता का श्लोकांश भी पढ़ा। 'देशे काले च पात्रे' च। माँ

बोली 'भिखारी के रूप में स्वयं भगवान् भीख मांगने आता है।' अब उसके योग्य और अयोग्य होने का विचार करो। क्या तुम भगवान् को अयोग्य कहोगे ? एक दूसरे में भेद करनेवाले तुम और मैं कौन हैं ? मैं नहीं समझती कि इसमें अधिक सोच विचार की आवश्यकता है···विनोबा जी ने लिखा है। 'माँ के इस कथन का ठीक ठीक जवाब में आज तक नहीं सोच पाया।'

आश्रम में आने के दो साल बाद उन्हें एक भंयकर आघात पहुँचा। १६१८ की इंफ्लुएंजा बीमारी में उनकी माता का स्वर्गवास हो गया।

आश्रम जीवन के पहले कुछ महीने तो विनोबा जी ने अपने को नियंत्रित करने में लगाये। दिन के आठ घंटे वे भोजन पकाने और पाखाने की सफाई में लगाते थे।

खादीग्राम में विनोबा जी का कमरा
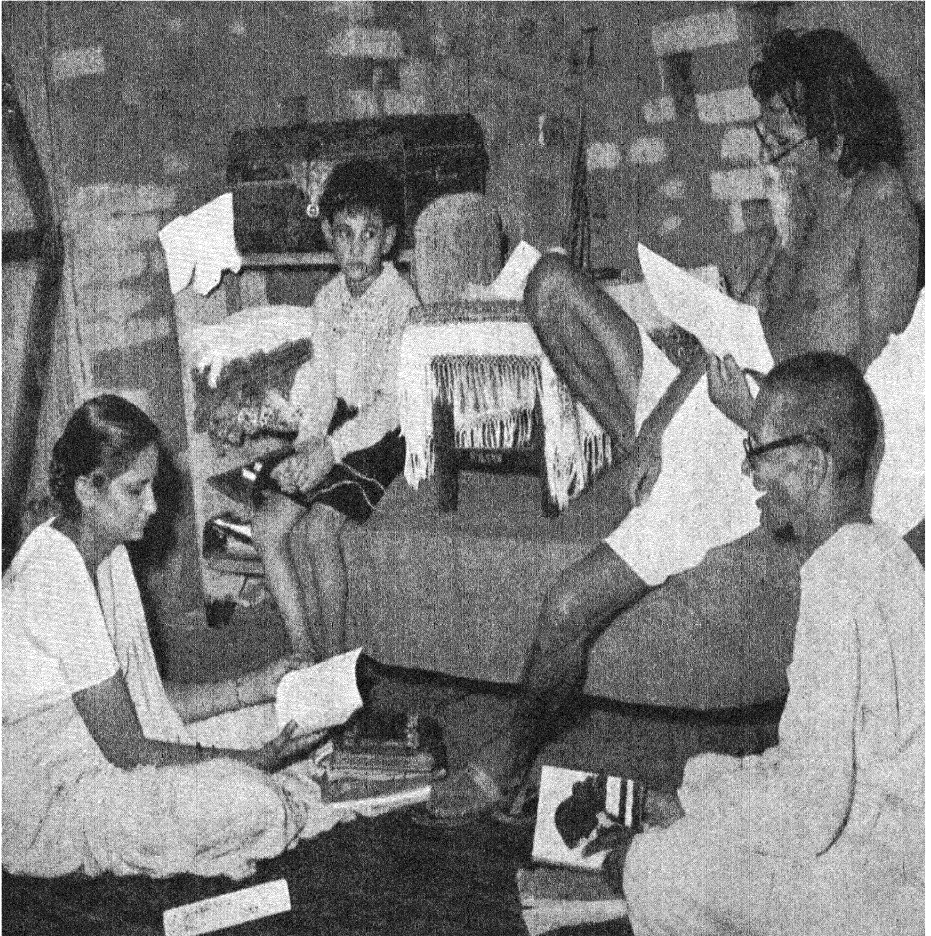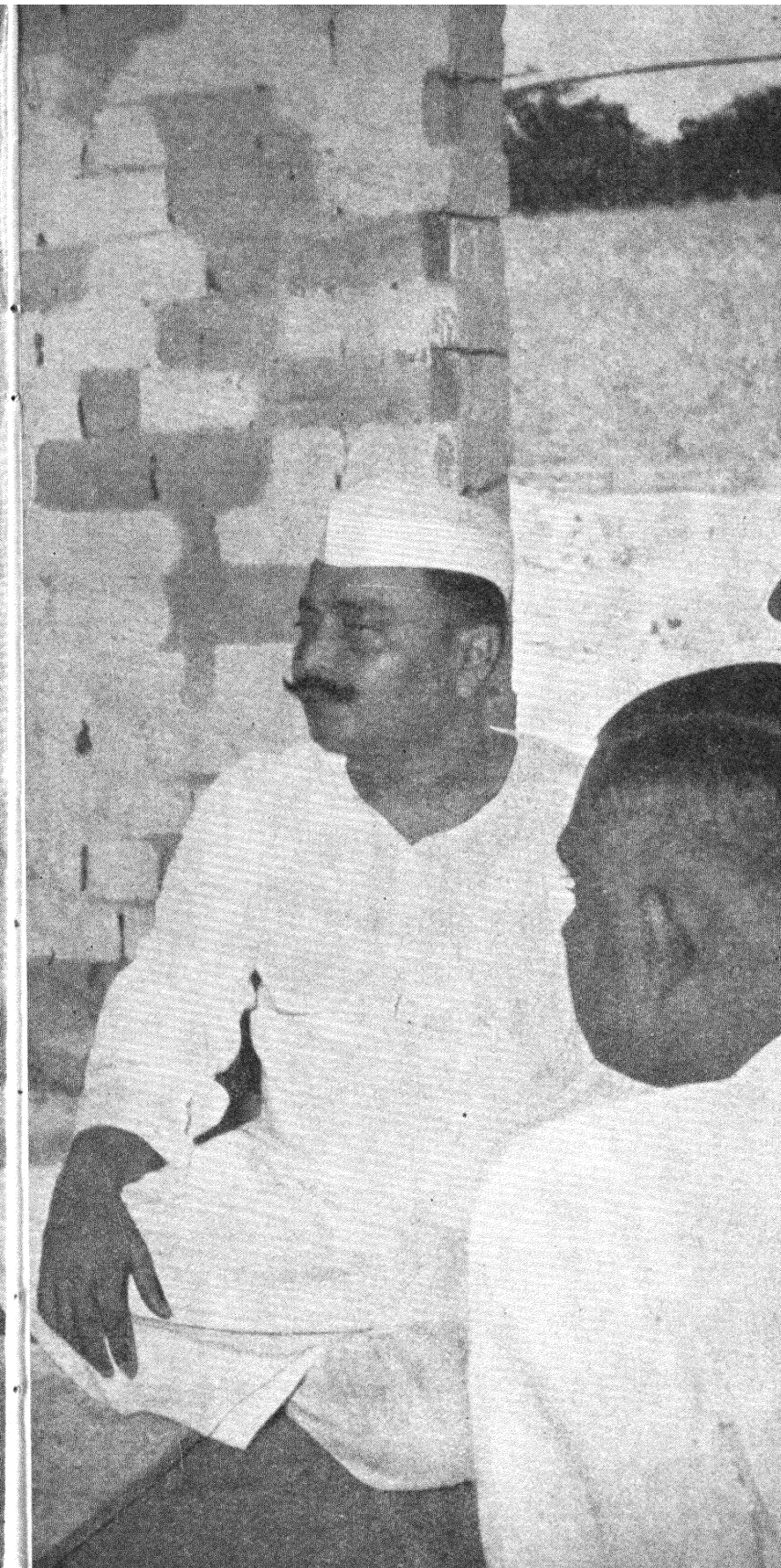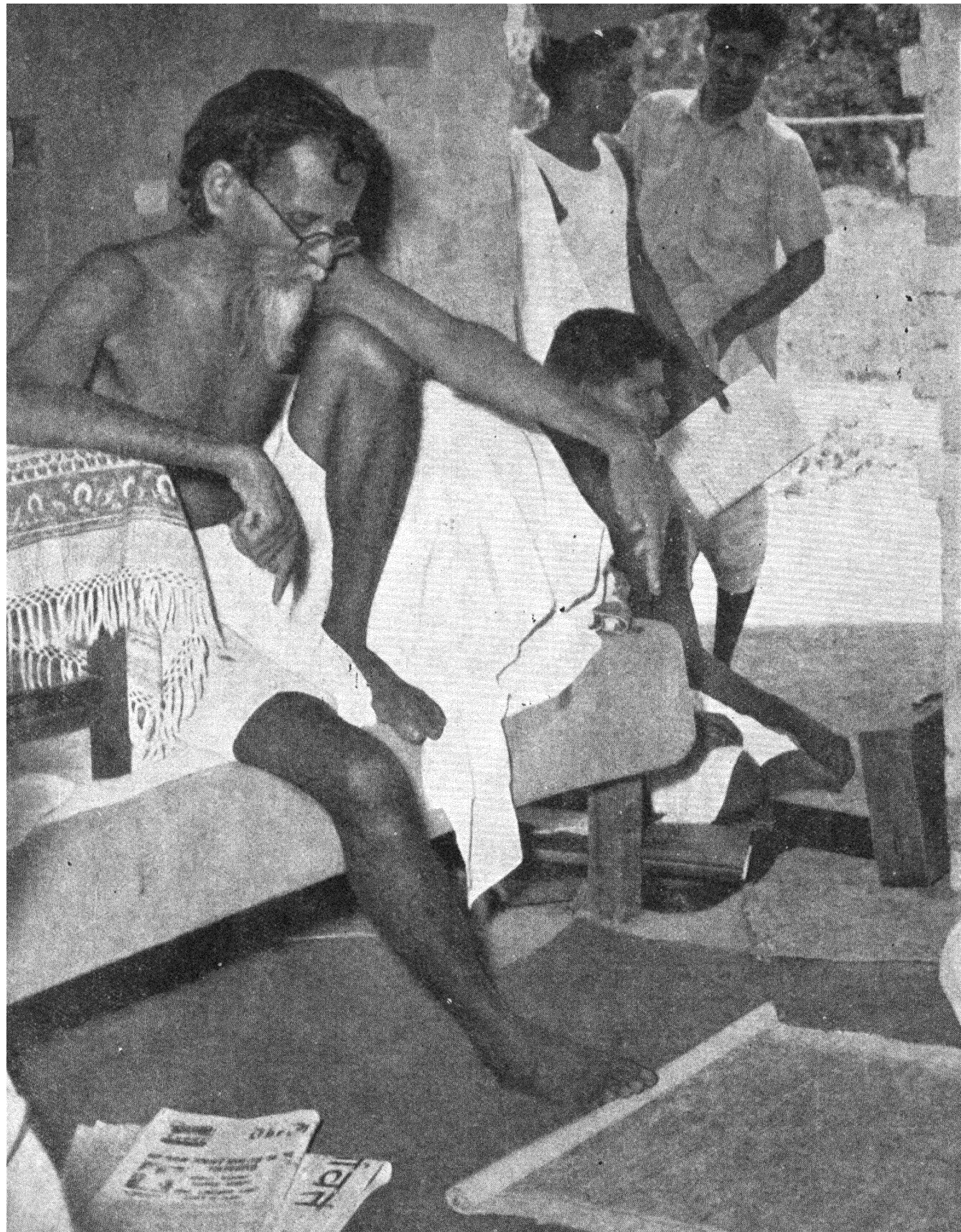
बिहार के जमींदारों के साथ भू-दान पर विचार-विनिमय कर रहे हैं

उन्होंने सोचा तक नहीं कि इससे उनके स्वाध्याय में बाधा पड़ती है। इसके बाद उन्होंने गीता पर विवेचन करना प्रारम्भ किया और सारे आश्रमवासी उनके भक्त बन गये।

इतना सब होने पर भी विनोबा जी में एक उत्कण्ठा बनी रही। उन्हें यह अनुभव होने लगा कि उनका बौद्धिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है। उनकी इच्छा थी कि वे अपनी संस्कृत की पढ़ाई फिर शुरू करें। इस ज्ञान पिपासा के कारण उन्होंने साल भर की छुट्टी ली और सतारा ज़िले के स्वास्थ्यप्रद स्थान वई चले गये। वहां से फिर वे बनारस गये। महाबलेश्वर पहाड़ियों की तलहटी में कृष्णा नदी के किनारे पर बसा हुआ वई एक पवित्र और सुन्दर स्थान है। गगोडा के भावे ब्राह्मणों ने वहां पर एक शिवजी का मन्दिर बनवाया हुआ है। संस्कृत के उद्‌भट विद्वान् नारायण शास्त्री मराठे से जिनकी वई में प्रज्ञा पाठशाला थी वे उन दिनों पढ़ते रहे।

सम्मेलन में प्रार्थना का दृश्य
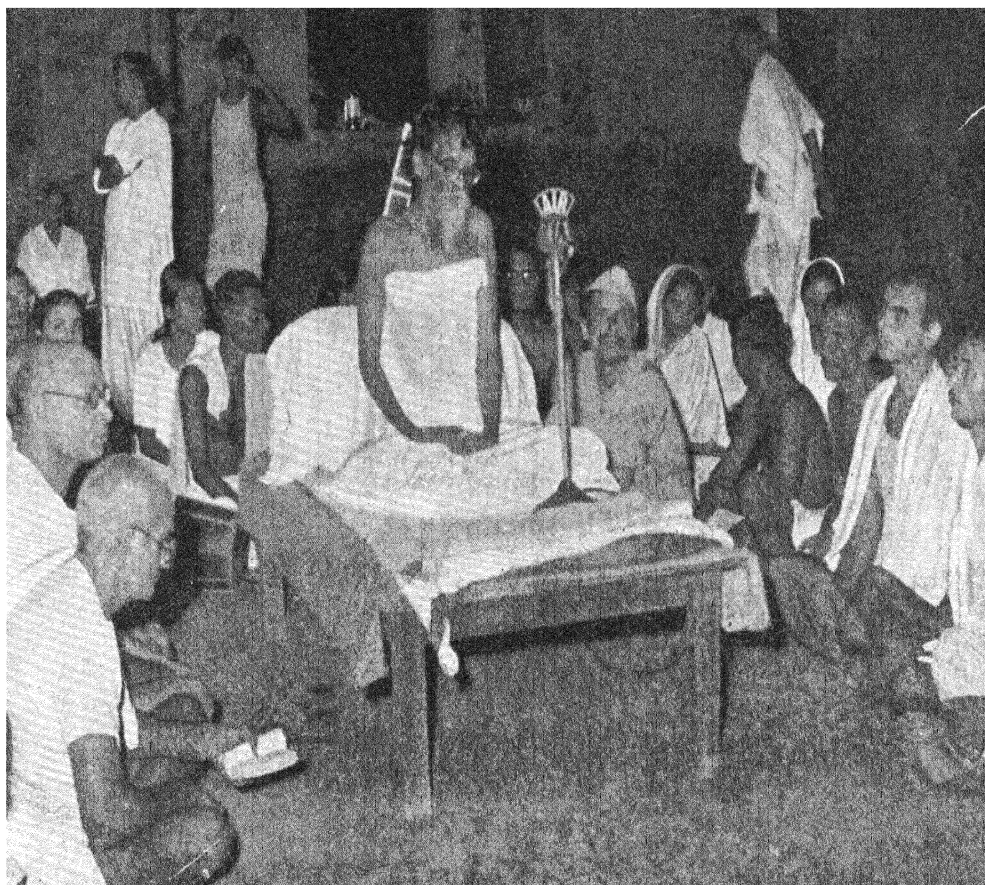
खादीग्राम में प्रातःकाल की प्रार्थना

गांधी जी के प्राइवेट सैक्रेटरी स्वर्गीय श्री महादेव देसाई ने विनोबा जी के विषय में लिखा है '१९१७ में जब दीनबन्धु एण्ड्रयूज़ आश्रम में थे, मुझे याद है उनसे विनोबाजी का परिचय गांधी जी ने इन शब्दों में कराया था : ये आश्रम के एक मोती हैं। ये दूसरों की तरह आश्रम में आशीर्वाद लेने नहीं आशीर्वाद देने आये हैं।'

विनोबा जी का कहना है 'आश्रम से मुझे क्या मिला है, यह मैं ही जानता हूँ। मेरी यह बहुत पहले से इच्छा थी कि अपने जीवन को सफल बनाने के लिए मैं कम से कम एक अंग्रेज की तो अवश्य हत्या करूं। किन्तु बापू ने इस बुरे विचार से मेरा पिण्ड छुड़ाया। मुझ में सदा जागरूक रहनेवाले क्रोध और लालसा को भी उन्होंने शान्त किया। मैं अनुभव करता हूं कि आश्रम के अपने जीवन में मैं प्रतिदिन उन्नति करता रहा हूं।'

महादेव देसाई ने लिखा है 'तुम उनके (विनोबा जी के) साथ उन्हें समझे बिना हफ़्तों गुज़ार सकते हो; किन्तु जब तुम उन्हें जान जाते हो तो वस्तुतः तुम उन्हें जानना
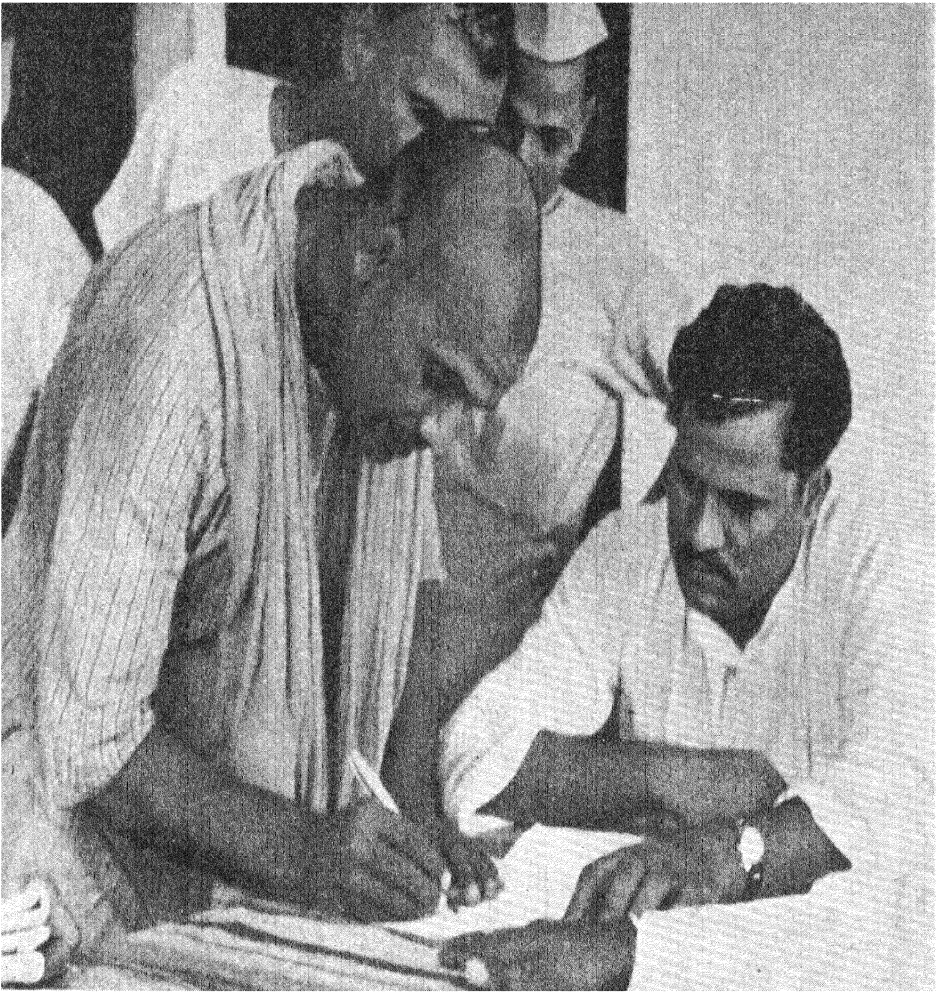
दान-पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए एक दानी

शुरू करते हो। तुम्हारा सामना एक ऐसे गम्भीर व्यक्ति से होता है जिसकी सीमा में तुम आसानी से प्रवेश नहीं कर सकते। वह अधिक बात नहीं करता; और अपने विषय में तो शायद कभी कुछ कहता है, फिर भी यदि तुम उसकी गहराई तक उतर सको तो निश्चय ही तुम्हारे मुख से निकलेगा ऐसा खजाना मुझे कहीं मिला था!' अपनी इस गम्भीरता के बावजूद अपने अनुयायियों के लिए विनोबा जी का दूसरा ही रूप है। उनके छात्र ही उन्हें सब से अधिक समझते हैं। उनमें से एक ने बहुत से रोचक और दुर्लभ संस्मरणों का संग्रह किया है।

विनोबा जी का आत्म-नियन्त्रण आश्चर्यजनक है। वे प्रातः ३ बजे ही उठ जाते हैं। एक बार तीन बजे जागते हुए भी वे ६ बजे तक बिस्तर मे नहीं उठे। इस कारण पश्चात्ताप के लिए उन्होंने तीन दिन का उपवास किया। तब से बीमारी की हालत को छोड़कर ऐसा कोई दिन नहीं गया जब वे तीन बजे न उठ गये हों। प्रति ब्राह्ममुहूर्त्त में यदि तुम सौभाग्य से उस समय उठे हुए हो तो उनके मधुर स्वर में गीता और उपनिषद् के श्लोकों को सुन सकते हो।

उनके अनुयायी उन्हें एक नियन्त्रण-प्रेमी और कठोरता से काम लेने वाले व्यक्ति के रूप में जानते हैं। फिर भी विनोबा जी के प्रति उनका प्रेम अगाध है और जिस दिन वे आश्रम छोड़कर चले उनका रोना रोके नहीं रुकता था।

उनके एक मित्र ने, जो उनसे सन् २० और ३० के बीच में कभी मिला था, उनका इस प्रकार वर्णन किया है 'उसने अपनी ऐनक नीची की और मुझे दो ज्वालाएं सी दीख पड़ीं। विनोबा जी न तो सुन्दर हैं और नाहीं कुरूप। रंग के सांवले और शरीर के दुबले। कठोर नियन्त्रण और तपस्वी जीवन के कष्टों ने शरीर में होने वाली उनकी मांसपेशियों को सर्वथा क्षीण कर दिया है। उनका शरीर सरकण्डे जैसा पतला है। वे बहुत ही एकान्तप्रिय हैं और उन्हें देखकर मुझे एक नारियल की याद हो आई जिसमें भरे हुए आनन्ददायक दूध को प्राप्त करने के लिये बाहर के कठोर छिलके को अवश्य तोड़ना पड़ेगा' विनोबा जी स्वयं में सीमित रहने—अर्थात अपने आप में लीन रहने की कला खूब जानते हैं।

अपने देश के अधिकांश धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान में विनोबा जी पारंगत हैं। वे इसमें रमे हुए हैं और ऐसा लगता है कि मानो उनकी आत्मा ही इसमें डूबी हुई है। वर्धा से निकलने वाले मराठी के एक मासिक पत्र 'महाराष्ट्र धर्म' में, जिसमें केवल उनके ही लेख छपा करते हैं, अपने एक लेख में विनोबा जी ने रामदास की व्याख्या की है या दूसरे शब्दों में जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण को इस प्रकार समझाया है :

'हम सोते हैं, घूमते हैं, काम करते हैं, जीते हैं और मर जाते हैं। ये सब प्रेरणा-रहित व्यापार हैं। क्या हम सोते हैं? या निद्रा हमें धर दबाती है? हम इसलिए जीवित हैं क्योंकि हम अपनी इच्छा से मर नहीं सकते। इस प्रकार अपनी अर्थहीन सत्ता को हम घसीटते हैं। हम अपने किसी भी काम में स्वतन्त्र नहीं हैं। इसलिए हमारा कोई भी व्यापार अपनी प्रेरणा से किया हुआ नहीं होता; सब प्रेरणा-रहित होते हैं। यह भी कोई जीने लायक जीवन है? स्वामी रामदास हमें स्वयं के स्वामी बन कर जीवित रहना सिखाना चाहते थे : हमारी सब क्रियाएं अपनी प्रेरणा से हों दूसरों की नहीं। वे मृत्यु से पहले मरना चाहते थे; स्वतन्त्र रहना चाहते थे। इसलिये उन्होंने अपना घर और दूसरा सब कुछ त्याग दिया। उन्होंने संसार के युवकों को अपनी युवावस्था में आश्रम जीवन अपनाने को कहा।
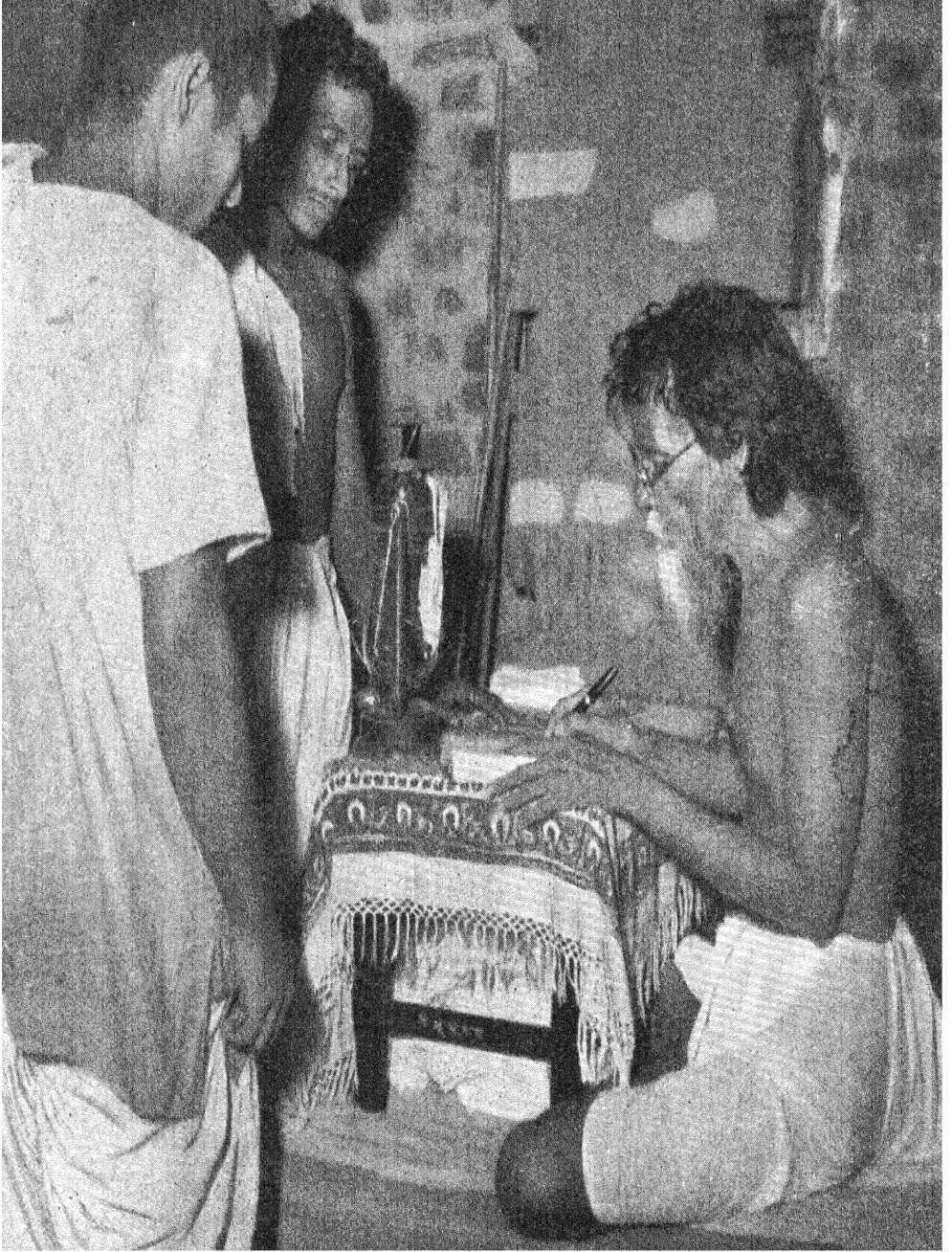
गाँव से आये हुए दर्शनार्थियों से भेंट कर रहे हैं

प्रह्लाद की तरह अपने बचपन और जवानी में उन्होंने भागवत धर्म का पालन किया और सारे महाराष्ट्र के सामने एक उदाहरण पेश किया।'

विनोबा जी स्वाध्याय करने में बहुत विश्वास करते हैं। उनका अध्ययन बहुत विस्तृत है। फिर भी वे अपने स्वाध्याय के लिए सदा अच्छी पुस्तकों का चुनाव पसन्द करते हैं। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है 'मैंने संस्कृत तो पर्याप्त पढ़ी है किन्तु 'शकुन्तला' नाटक अभी तक नहीं पढ़ा। ईश्वर की वाणी मोक्ष प्राप्ति के लिए है; मानसिक आनन्द, और विलास के लिए नहीं। मैंने गीता, वेद, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र पढ़ने के लिए संस्कृत पढ़ी थी 'शकुन्तला' पढ़ने के लिए नहीं। मोक्ष के मार्ग का उपदेश देने वाली पुस्तकें पढ़ने के लिए इसे सीखा, कविता और साहित्य ज्ञान के लिए नहीं।'

विनोबा जी बड़े विद्वान् हैं। उनका संस्कृत का ज्ञान विशाल है। बहुत कम लोगों ने हमारे शास्त्रों का इतना गहरा अध्ययन किया होगा। वेद और पुराण उनके लिए हस्तामलकवत् हैं। विद्वान् तो बहुत होते हैं परन्तु इतना गहरा पाण्डित्य बहुत कम में होता है। ऐसे लोगों की संख्या तो और भी कम है जिन्होंने पढ़ी हुई विद्या को पूरी तरह गुना है और अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन बना लिया है। विनोबा जी का ज्ञान पूर्ण विकसित हो चुका है। उनके साथ थोड़े दिन रहना भी अपने आप में एक शिक्षा और नया अनुभव प्राप्त करना है।

उनका जीवन गीता और उपनिषद् के आदर्शों के अनुसार ढला हुआ है। इन पर मिलने वाले सब भाष्यों को उन्होंने पढ़ा है। वे महीनों तक पण्डितों और ज्ञानियों की खोज में पैदल ही दक्षिण के गाँवों और पहाड़ों में चक्कर लगाते रहे। उन्होंने गीता और उपनिषद् पर भाषण दिए। वे लम्बी-लम्बी यात्राएं पैदल कर सकते हैं। जीवन के प्रारम्भिक दिनों में ४०० मील की पैदल यात्रा में उन्होंने गीता पर ५० व्याख्यान दिये। 'महाराष्ट्र धर्म' पत्र में उनके व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर तैयार की गई उपनिषदों तथा दूसरे दर्शन सम्बन्धी ज्ञान की व्याख्यायें प्रकाशित होती रही हैं।

विनोबा जी के एक मित्र ने लिखा है, 'वे साहित्य से सदा दूर रहे हैं पर उनके जैसे गुजराती के विद्वान मैंने बहुत थोड़े ही देखे हैं।' विनोबा जी को मराठी, गुजराती, हिन्दी, बंगला, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, अरबी, फारसी, फ्रेंच और इंग्लिश आदि बहुत सी भाषाओं का ज्ञान है। उन्होंने मूल रूप में कुरान को पढ़ने के लिए ४६ वर्ष की आयु में अरबी सीखी। विनोबा जी की भाषा सीधी और सरल होती है। वे बड़ी सावधानी से शब्दों का चुनाव करते हैं; निरर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं करते। एक बार विनोबा जी ने कहा, 'अपने शब्दों का चुनाव सदा सावधानी से करना चाहिये। क्योंकि शब्दों का चुनाव ठीक न होने पर तुम्हारी बात अस्पष्ट रह जायेगी। कुछ शब्दों से भाव पूरा नहीं प्रकट हो पाता और कुछ शब्द आवश्यकता से अधिक भाव प्रकट करते
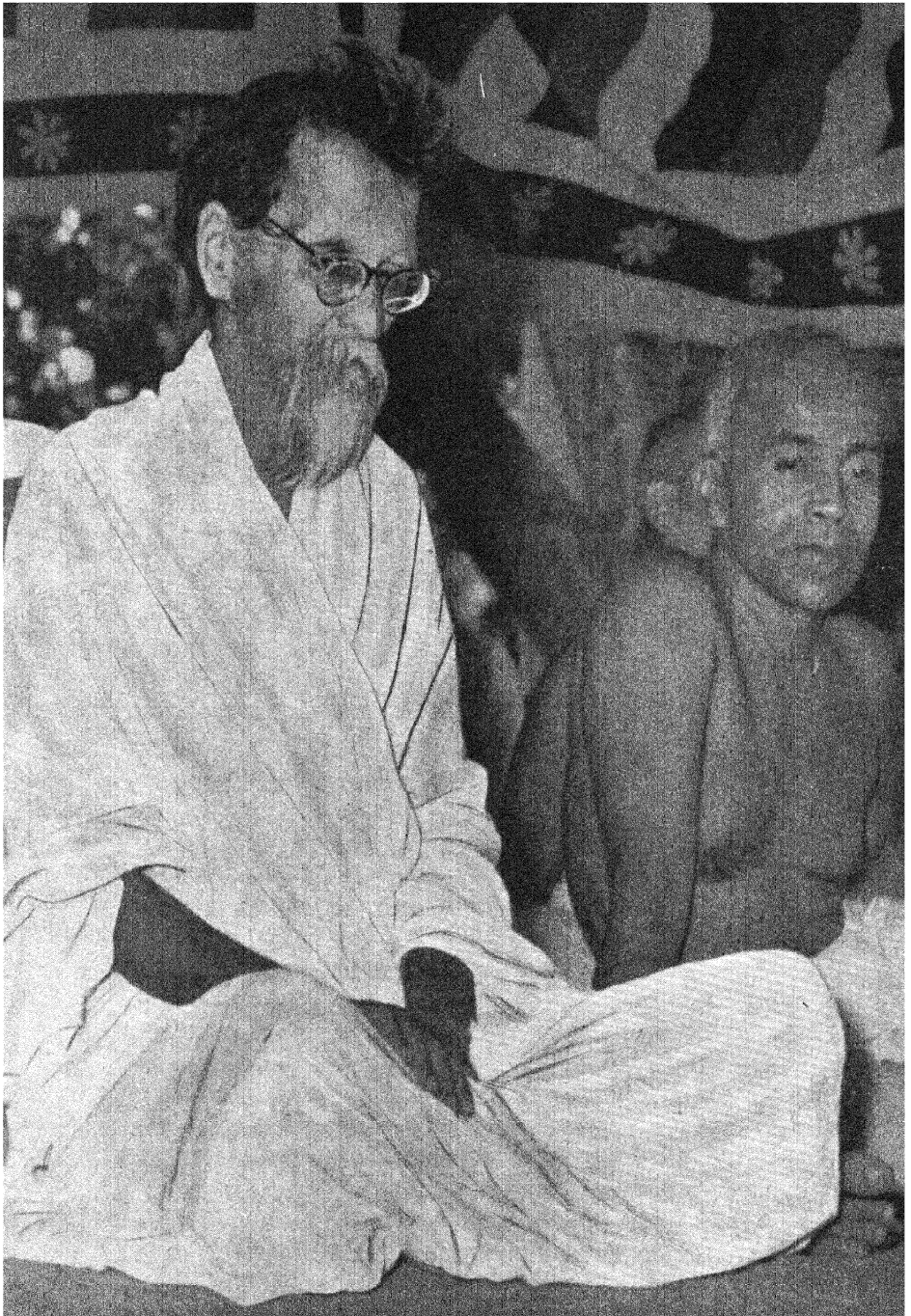
हैं। कुछ दूसरे शब्द ऐसे होते हैं जिनका भाव विरोधी होता है। इसलिए इन सब कमियों से बचकर मन में जैसा भाव उठे उसे वैसा ही प्रकट करना चाहिये।'

विनोबा जी बहुत अच्छे वक्ता और उत्तम कोटि के लेखक हैं। उनके विचार और कल्पना में आश्चर्यजनक स्पष्टता है। वे हमेशा प्रचार और सार्वजनिक जीवन के झमेले से दूर रहे हैं।

विनोबा जी के विचार और उनका दृष्टिकोण बहुत मौलिक हैं। उनके व्याख्यानों से उनकी विद्वत्ता, ज्ञान और सांसारिक बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। आजकल बिना भाषण दिये उनका एक भी दिन नहीं जाता। जयप्रकाशनारायण उनके विषय में कहते हैं, 'जो कुछ वे बोलते हैं वह राजनीतिक बकवाद नहीं होती किन्तु वे सदा कोई नई बात ही कहते हैं।' यह सचमुच एक अद्भुत बात है। किसी महत्त्व की बात पर बोलते समय उनके भाषण में पाण्डित्य और सरलता का सुन्दर मेल होता है।

उनकी पुस्तकों में गीताई, जो कि मराठी में गीता का अनुवाद है और जिसे उन्होंने अपनी माता को समर्पित किया है, बहुत प्रसिद्ध है। महादेव देसाई ने इसके विषय में लिखा था, 'उन्होंने (विनोबा ने) गीता का मराठी में पद्यमय अनुवाद किया है और यह अनुवाद आश्चर्यजनक रूप में मूल गीता में व्याप्त संगीत का आनन्द देता है। महाराष्ट्र में इसकी १,००,००० प्रतियां बिक चुकी हैं। 'गीता प्रवचन' नाम की उनकी पुस्तक
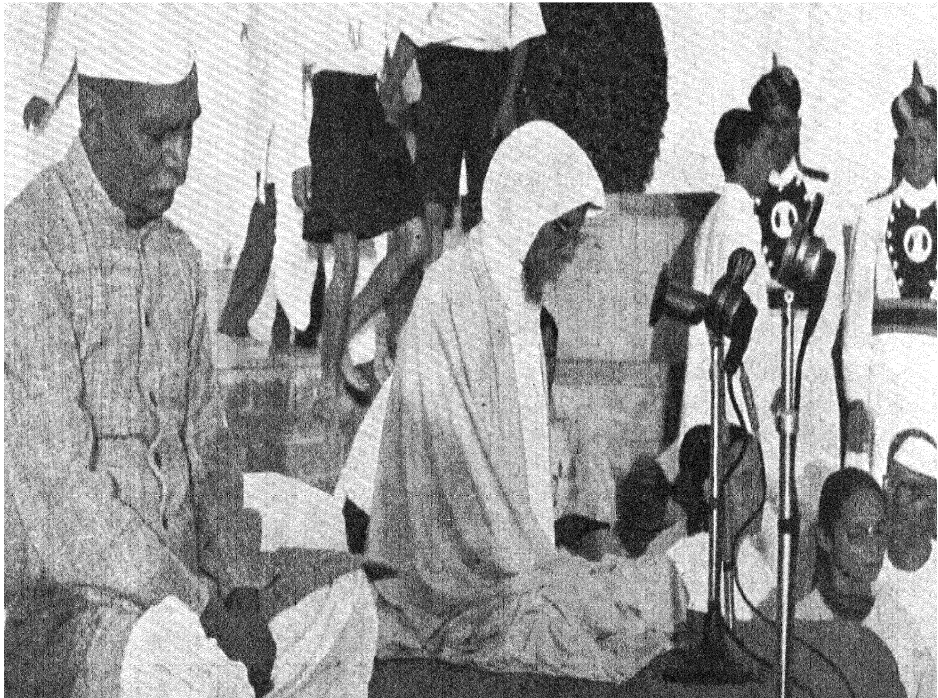
के, जिसका मूल मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया गया है, ५ संस्करण निकल चुके हैं और उनकी संख्या ६६,००० तक पहुँच गई है।

१९५१ में भूदान आन्दोलन प्रारम्भ करने से पहले उनका नाम केवल तीन बार प्रसिद्धि में आया; वह भी थोड़े समय के लिए। १९२३ में उन्हें अचानक ही नागपुर के राष्ट्रीय पताका सत्याग्रह का नेतृत्व सम्हालना पड़ा। आन्दोलन को चलाने के लिए जो कमेटी बनायी गई थी उसके सब सदस्यों को एकाएक पकड़ लिया गया और उसे चलाने के लिए अकेले विनोबा ही रह गये। आन्दोलन को फिर शुरू करने के लिए जब अगले दिन सूचना निकाली गई तो उन्हें भी दूसरों के साथ जेल भेज दिया गया। वहाँ से तीन महीने बाद छूट कर विनोबा जी वर्धा की अपनी कुटिया में चले गये।

अगले साल हरिजनों के मन्दिर प्रवेश पर लगाये गये प्रतिबन्ध के विरोध में केरल में गुरुवायूर सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए गांधी जी ने इन्हें चुना।

अक्तूबर १९४० में इनके शान्त और स्वाध्यायशील जीवन में फिर एक बाधा आयी जब गांधी जी ने इनको प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में चुना। उस समय तक विनोबा जी को बहुत थोड़े लोग जानते थे। एक दिन के लिए उनका नाम सब की जबान पर चढ़ गया और उसके बाद फिर वे अप्रसिद्धि में चले गये।

गांधी जी का इनके प्रति बहुत प्रेम था और वे इनका मान भी बहुत करते थे। अक्सर महत्त्वपूर्ण निर्णय करने से पहले गांधी जी इनकी राय अवश्य लेते थे।

१९२५ के आसपास डा० राधाकृष्णन् आक्सफोर्ड जानेवाले थे। जाने से पहले वे गांधी जी से मिलने सेवाग्राम गये। अपने पद का कार्यभार सम्हालने से पहले वे गांधी जी का आशीर्वाद लेने आये थे। वहां पर उपस्थित एक मित्र ने उस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है—'मेरे मन में अभी भी वह दृश्य अंकित है। एक ओर वह महान आत्मा थी और दूसरी ओर था एक महान् शिक्षक। पहला काम करनेवाला था जिसके आगे संसार नतमस्तक था, दूसरा विचारक था जिसने संसार को जीत लिया था।'

विदाई के अवसर पर गांधी जी ने उस विद्वान् दार्शनिक से कहा, 'पास ही पवनार में विनोबा रहते हैं। आप उनसे जरूर मिलें। उनसे मिलना एक प्रसन्नता की बात होगी।'

२० अक्तूबर, १९४० के हरिजन में जनता को विनोबा जी का परिचय देते हुए गांधी जी ने लिखा, 'विनोबा भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता की आवश्यकता में पक्का विश्वास रखते हैं। ये इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। इनकी दृढ़ सम्मति है कि खादी को केन्द्र मान कर चलाये गये रचनात्मक कार्यक्रम के बिना गाँव वालों को सच्चे अर्थ में स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। उनका अटूट विश्वास है कि चर्खा अहिंसा का सबसे उपयुक्त निशान है और इसे उन्होंने अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है। वे कभी

विनोबा जी के शिविर की महिला कार्यकर्त्रियाँ

राजनीतिक प्लेटफार्म पर प्रसिद्धि में नहीं आये। बहुत से सच्चे कार्यकर्ताओं की तरह इनकी भी यही धारणा है कि भीड़भाड़ वाले राजनीतिक प्लेटफार्म की अपेक्षा सविनय अवज्ञा आन्दोलन के साथ चुपचाप रह कर काम करने से अधिक गहरा असर पड़ता है।'

। 'ये संस्कृत के बड़े विद्वान् हैं। आश्रम की स्थापना के समय से ही वे यहाँ हैं। ये आश्रम के प्रारम्भिक सदस्यों में से हैं। संस्कृत में और अधिक योग्यता हासिल करने के लिये उन्होंने आश्रम से एक साल की छुट्टी ली। और ठीक साल भर पहले जिस समय उन्होंने आश्रम छोड़ा था उसी समय दूसरों का ध्यान आकृष्ट किये बिना वे वापिस लौट

आये। मैं भूल गया था कि उस दिन उन्हें आना था। पाखाने की सफाई से लेकर भोजन पकाने तक आश्रम के सब शारीरिक कामों में ये भाग लेते रहे हैं। यद्यपि इनकी स्मरण-शक्ति बड़ी अद्भुत है और ये स्वभाव से ही अध्ययनशील हैं, फिर भी इन्हों ने अपना अधिकांश समय कताई में लगाया है और इसमें ऐसी निपुणता प्राप्त कर ली है जो बहुत कम को प्राप्त होती है।'

'इन्होंने अपने दिल से अछूतपन का नामोनिशान तक दूर कर दिया है। इनके अनुयायियों और कार्यकर्ताओं का एक दल है जो इनकी आज्ञा पर बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहता है। इन्होंने एक नौजवान तैयार किया है जिसने कोढ़ के रोगियों की सेवा के लिए अपना जीवन लगा दिया है। 'दरिद्र नारायण' के सेवा कार्य के लिए ये वर्धा के समीप एक गाँव में रहते थे और अब वहाँ से और आगे वर्धा से ५ मील दूर पवनार में रहते हैं।'
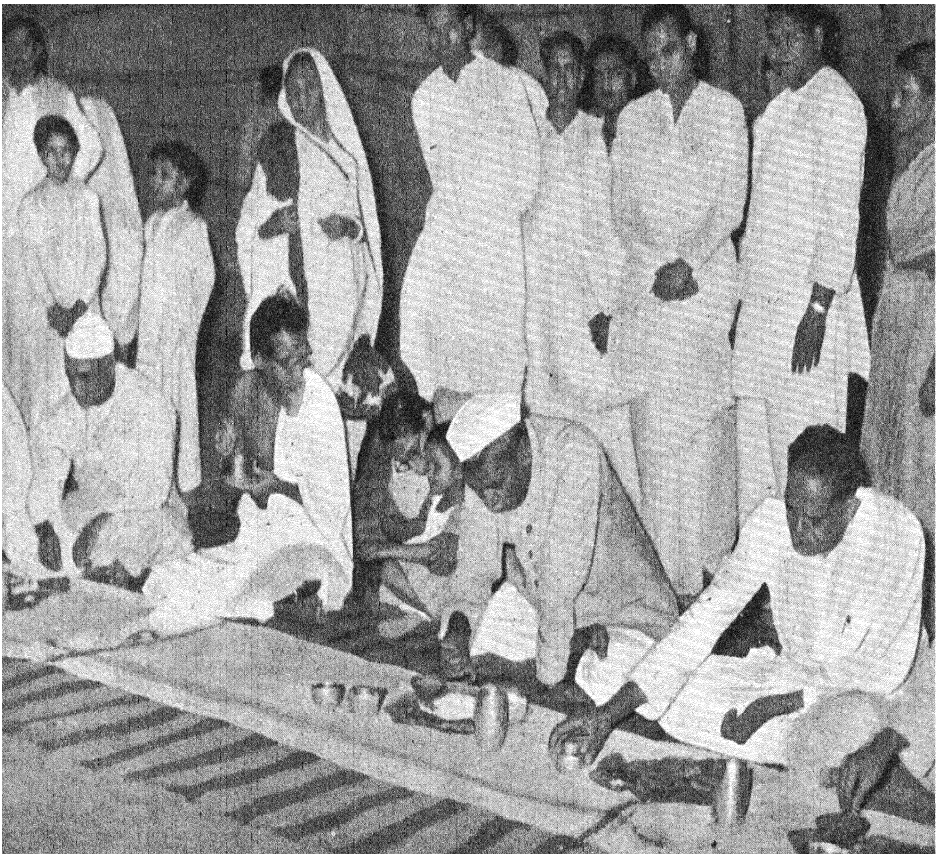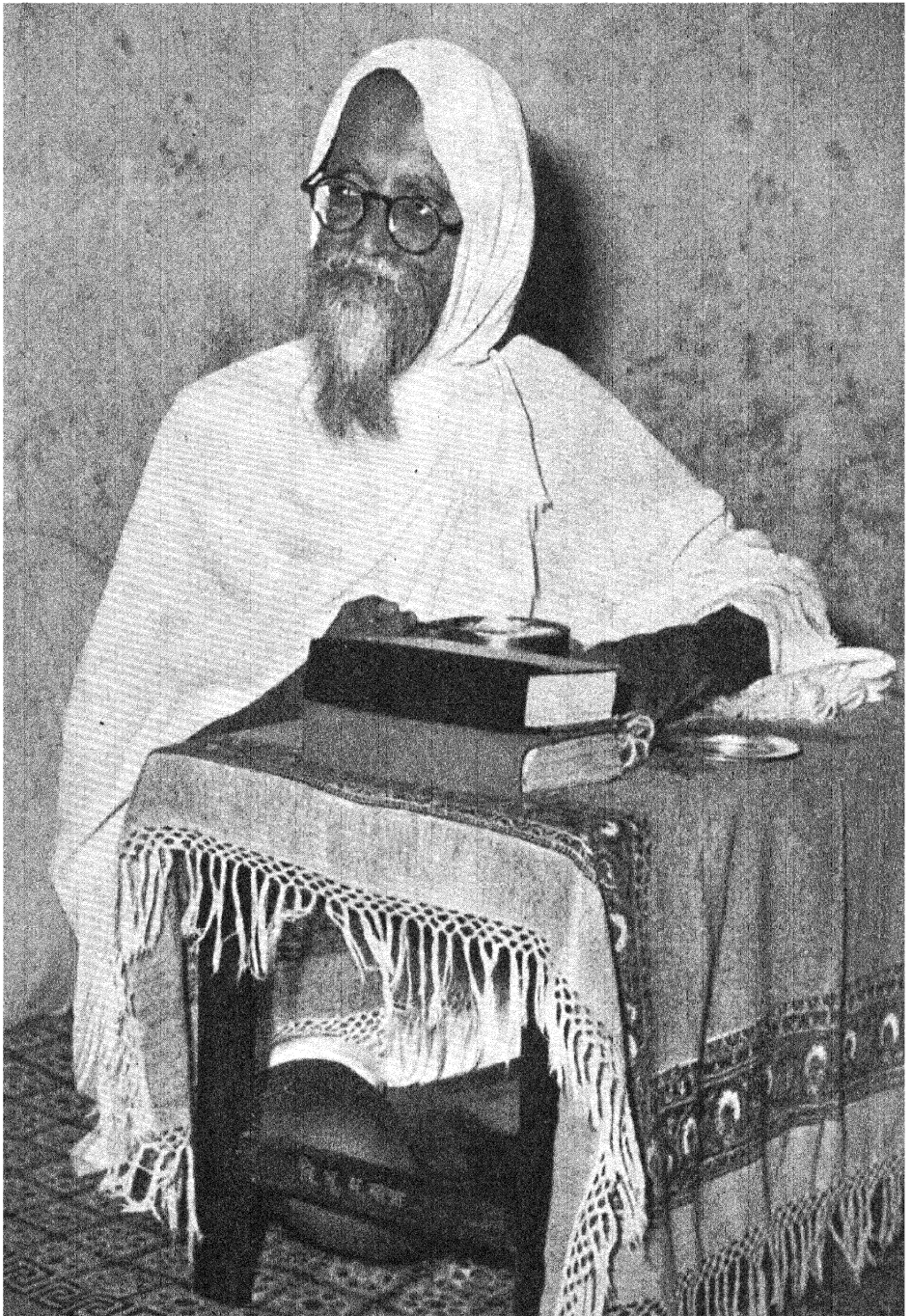
खादीग्राम की एक सभा में श्री जयप्रकाश नारायण भाषण कर रहे हैं

१९२३ में सत्याग्रह करने के कारण विनोबा जी को नागपुर जेल में कैद किया गया था। श्री राजगोपालाचारी ने, जो वहां उनसे मिले थे, लिखा है—'विनोबा जी को देखो जो देवता के समान दयालु हैं; दूर-दूर की उड़ान भरने वाली जिनकी आत्मा ने ज्ञान, दर्शन और धर्म की ऊंचाई को माप लिया है और इस पर भी जिनकी नम्रता इतनी वास्तविक और सचाई से भरी है कि इन्हें न जानने वाले अफ़सर इनकी महानता का पता नहीं पा सकते। जेलर ने जिस 'क्लास' में उन्हें रखा है उसके अनुसार वे रोड़ी भी कूटते हैं और किसी को नहीं मालूम कि वे चुपचाप कितना शारीरिक कष्ट सह रहे हैं। किन्तु जेल के बाहर खड़े हुए हम लोग, जिन्होंने उनके साथ किये जाने वाले बर्ताव के बारे में सुना है, अनायास ही कांप उठते हैं।'

हाल के कुछ सालों से विनोबा जी में बड़ा परिवर्तन हो गया है। अब वे वैसे

शर्मीले और अपने आप में सीमित रहने वाले व्यक्ति नहीं हैं जैसे भूदान-यज्ञ चलाने के पहले थे। अब वे लोगों से मिलना, उनसे विचार विमर्श करना और जनता की आम सभाओं में भाषण करना पसन्द करते हैं। उनका कथन है कि अच्छे विचारों को अधिक लोगों तक पहुँचना चाहिये जिससे वे लोग शान्ति का सन्देश देने वाले उनके विचारों को समझ सकें। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भजन गायक तुको जी महाराज का कहना है कि कभी ऐसा भी समय था जब विनोबा जी के पास आसानी से पहुँचा भी नहीं जा सकता था। तुको जी लिखते हैं—'भगवान् सबके भले के लिए है। ईश्वर के सिवाय बापू और क्या थे? आज पूजनीय विनोबा जी भगवान् बन गये हैं। विनोबा जी अब जो है, पहले वैसे नहीं थे, उनका जीवन एकाकी जीवन था। न तो वे किसी से मिलते थे और न किसी से बात ही करते थे। यदि बापू आज हमारे बीच होते तो हम विनोबा जी को गांवों में घूमते हुए नहीं देखते। अब वे तुमसे नहीं तुम्हारे लिए बातें करते हैं।'

विनोबा जी काम करने वाले व्यक्ति हैं। वे ऐसी किसी बात का उपदेश नहीं देते जिस पर वे स्वयं आचरण न करते हों। अपने अनुयायियों को सम्बोधन करते हुए उन्होंने एक बार कहा: 'मैं मृत्युपर्यन्त अपने सिद्धान्तों पर आचरण करना और उनका प्रचार करना पसन्द करूंगा। महाराष्ट्र की यात्रा करके मैं ऐसा कर सकता था। मैं सारे महाराष्ट्र का चक्कर लगा लेता; पर प्रचार के उस तरीके को मैं व्यर्थ समझता हूं। मैं शास्त्रार्थ करके, भाषण और उपदेश देकर गीता के 'निष्काम—योग' का प्रचार नहीं कर सकता था। मैं नहीं जानता कि उपनिषद् के सिद्धान्तों का किसी अन्य उपाय द्वारा भी प्रचार किया जा सकता है सिवाय इसके कि अपने चारों ओर कुछ बच्चों को एकत्रित करके—जैसा कि मैंने अब किया हुआ है—उनमें इन सिद्धान्तों को कूट-कूट कर भरा जाये। मैं पाँच पुस्तकें लिख सकता हूं या पाँच भाषण दे सकता हूं। वे बिजली की एक चमक से भी जल्दी अदृश्य हो जायेंगे किन्तु, जैसा कि मैं चाहता हूं, तुम उन्हें सीखो उन पर आचरण करो तो मुझे पक्का यकीन है तुम दुनिया पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ोगे।'

बावजूद इसके कि उनकी आंतों में फोड़ा है और शरीर से वे कमज़ोर हैं—विनोबा जी कभी सुस्त और निष्क्रिय नहीं रहते। वे बहुत थोड़ा भोजन करते हैं। उनके भोजन में दही और शहद होता है, इसे वे निश्चित समय बाद दिन में ५ बार लेते हैं। फिर भी दिन भर में १०,१५ मील चलने की उनमें शक्ति कहीं से आ ही जाती है। जिन दिनों वे यात्रा पर होते हैं तो वे और उनके शिष्य प्रातःकाल दिन के तीन बजे किसी सोये पड़े गाँव में पहुँच जाते हैं। कुछ देर तालियां बजती हैं, घण्टियां झनझना उठती हैं, एक लालटेन का धुंधला प्रकाश टिमटिमाता है, धूल में खड़ाऊंओं की खड़खड़ाहट होती है और गीत गाते हुए सारा दल दूसरे गाँव के लिए चल देता है। जब वे यात्रा पर नहीं होते तो एक घण्टा देर से उठते हैं और घण्टा भर ध्यान करते हैं। ५ बजे वे शहद के साथ

दही का पहला प्याला लेते हैं और प्रत्येक ग्रास को गले के नीचे उतारने से पहले उसे ८ बार मुंह में चलाते हैं। विनोबा जी के साथ रहने वालों में एक दर्जन भर साहसी युवक और स्त्रियां होती हैं। ये तीन महीने से लेकर साल भर तक उनके साथ रहते हैं। इस प्रकार साथ रहने वाले सदा बदलते रहते हैं। उनमें से कुछ शिष्य उनसे पहले ही दूसरे गाँव चले जाते हैं और वहां उनके पहुँचने की सूचना दे देते हैं। साथ ही इस बात की भी देखभाल करते हैं कि सब व्यवस्था ठीक है या नहीं ?

आदर्श के प्रति इतनी आस्था होने पर भी विनोबा जी हर बात को वास्तविक रूप में देखने वाले और व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं। जब वे उन इलाकों का दौरा कर रहे थे जहाँ न जाने के लिए पुलिस ने उनसे आग्रह किया था तब भी उन पर कोई आँच न आई। उन्होंने अहिंसा के सिद्धान्त का वहां प्रचार करना प्रारम्भ किया किन्तु जल्दी ही उन्हें यह अनुभव हुआ कि केवल उपदेश देना ही काफ़ी नहीं है। विनोबा जी ने लिखा है—'मै स्वीकार करता हूँ कि आग लगाने और हत्या आदि के कारनामों से मैं घबराया नहीं क्योंकि मैं यह बात अच्छी प्रकार जानता हूँ कि अतीत की किसी भी नई संस्कृति का जन्म खून की होली के साथ हुआ था। आवश्यकता इस बात की है कि न केवल हम डरें ही नहीं किन्तु अपने दिमाग़ को भी ठण्डा रख सकें और शान्तिपूर्ण उपायों से झगड़ों का निपटारा कर सकें। पुलिस से यह उम्मीद नहीं की जाती कि वह सुधार के उपाय सोचे और उन्हें बर्ताव में लाये। किसी जंगल से शेर चीतों को हटाने में उनको लगाना ज़रूर फ़ायदेमन्द होगा। किन्तु यहां तो हमें मनुष्यों के साथ बर्ताव करना है—चाहे वे कितने ही मार्गभ्रष्ट और भूल में पड़े हुए क्यों न हों। जब किसी नये विचार का जन्म होता है तो केवल दबाने का कुछ परिणाम नहीं होता।'

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने एक आम सभा में भाषण देते हुए कहा—'यह नया देवदूत हममें नयी आशाएँ जगाते हुए तथा हमारे लिए एक नई सभ्यता और नये जीवन के विशाल क्षेत्र का विस्तार करते हुए हमारे बीच में रहता है।'

ऐसा है यह आदमी जो चुपचाप एक क्रान्ति कर रहा है। सौभाग्य से भारत उसका कार्यक्षेत्र है पर हो सकता है कि ऐसा भी समय आये अब सारा ही संसार विनोबा के विचारों को स्वीकार कर ले।
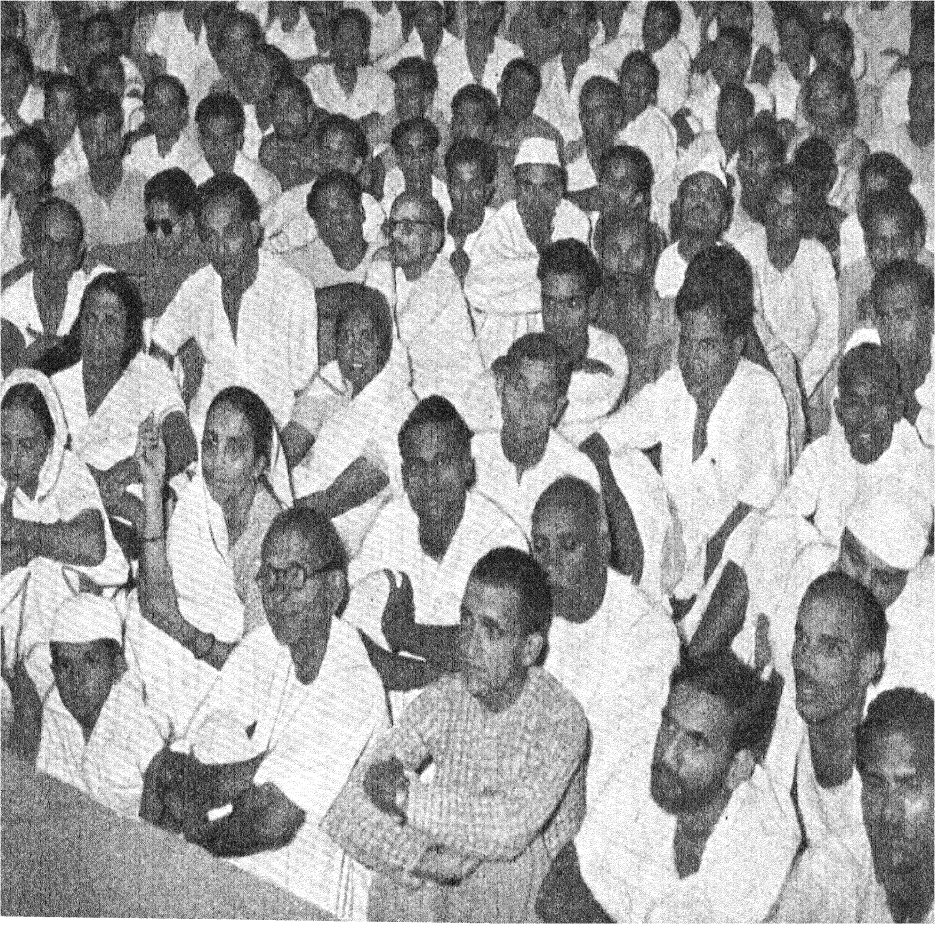
सर्वोदय सम्मेलन में आये हुए प्रतिनिधि

चौथा अध्याय

संदेश

आजकल की दुनिया विज्ञान की विनाशात्मक शक्तियों की परीक्षणस्थल बनी हुई दिखाई देती है। यद्यपि कई बातों में विज्ञान ने मानव के जीवन को अधिक पूर्ण बनाया है; पर अब इसके द्वारा की जाने वाली भलाई की अपेक्षा बुराई की मात्रा अधिक बढ़ गई है। विनोबा जी का कहना है—'विज्ञान पृथ्वी को स्वर्ग में बदल सकता है' किन्तु क्या सचमुच विज्ञान ने ऐसा कर दिया है? और न कोई ऐसी आशा ही दिखाई देती है कि

भविष्य में विज्ञान ऐसा करेगा। विनोबा जी का विचार है 'अहिंसा के साथ मिलकर ही विज्ञान यह काम कर सकता है।'

एक ग्राम सभा में भाषण देते हुए विनोबा जी ने घोषणा की 'धन्य हैं वे लोग जिनके पास ज़मीन है, पर वे उनसे भी अधिक धन्य हैं, जिन्हें भूमिहीन ग़रीबों को ज़मीन देने का अवसर मिला है। 'भूमिहीनों को दान में भूमि मिल जाने के कारण ही विनोबा जी के आन्दोलन का महत्त्व नहीं है; असल में इसे क्रान्ति का चोला पहनाने वाली यह भावना है जिससे प्रेरित होकर यह भूमिदान का कार्य किया जा रहा है। दान लेने वाला कहता है—'यह दान नहीं ईश्वर का न्याय है। 'दानी कहता है' 'यह मेरी नहीं ईश्वर की ज़मीन है जिसका उपयोग मैं दूसरों के साथ मिलकर कर रहा हूँ।' दान वह गुण है जो दान देने और लेने वाले दोनों को भगवान् के सामने नम्र बनाता है। विनोबा जी का कथन है—'ईश्वर की दया से इस प्राचीन देश के लोगों के हृदय में छिपी हुई प्रेम और करुणा की भावना अब फूट पड़ी है और केवल उसकी दया से एक नयी दुनिया का निर्माण हो सकेगा।'

दूसरी बात जो विनोबा जी के आन्दोलन से पता चलती है यह है कि राजनीतिक सरकार एक अच्छे उद्देश्य को प्राप्त करने में साधनमात्र है। और यह उद्देश्य जनता का कल्याण है। विनोबा जी का विचार है कि कार्य करने की शक्ति किसी एक ही केन्द्र में सीमित नहीं होनी चाहिये। वे कहते हैं, 'हर एक गाँव को इतना योग्य बनाया जाये कि यह इसका विकास कर सके। इसलिये मैं चाहता हूँ कि गाँव के पास यह निर्णय करने का अधिकार हो कि वह किस वस्तु का आयात करे और किसका नहीं। शक्ति के केन्द्रीकरण ने हमें बड़े-बड़े राष्ट्र यानी बड़े राजनीतिक यन्त्र दिये हैं। विज्ञान के द्वारा सीमित कर दिये गये संसार में निर्णय करने का अधिकार गाँव जैसी छोटी इकाइयों के पास होना चाहिये।'

परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि विनोबा जी मुसीबतों से डर कर भाग निकलने के रास्ते का प्रचार कर रहे हैं। उनका कहना है। 'यदि भारत दुःखी और ग़रीब देश बना रहता है, जैसा कि आज है तो फिर भारत के (उन्नत होने के) लिए कोई आशा नहीं है।' ये शब्द बड़े अर्थपूर्ण हैं। भौतिक समृद्धि की अपेक्षा मालिक होने का अभिमान और व्यवहार में अन्याय हमारे लिए अधिक हानिकारक है। इसलिए विनोबा जी अपरिग्रह यानी किसी संपत्ति को न बटोरने और बिना आसक्त हुए ट्रस्टी बनने की बात पर अधिक जोर देते हैं।

भूमि का बँटवारा करने के साथ ही विनोबा जी का उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। जैसा कि वे स्वयं बताते हैं—'यह एक नैतिक और आध्यात्मिक आन्दोलन है जिसका उद्देश्य अपरिग्रह के रास्ते से, दूसरों से छीना झपटी करके नहीं, सर्वोदय, यानी सबका कल्याण प्राप्त करना है।
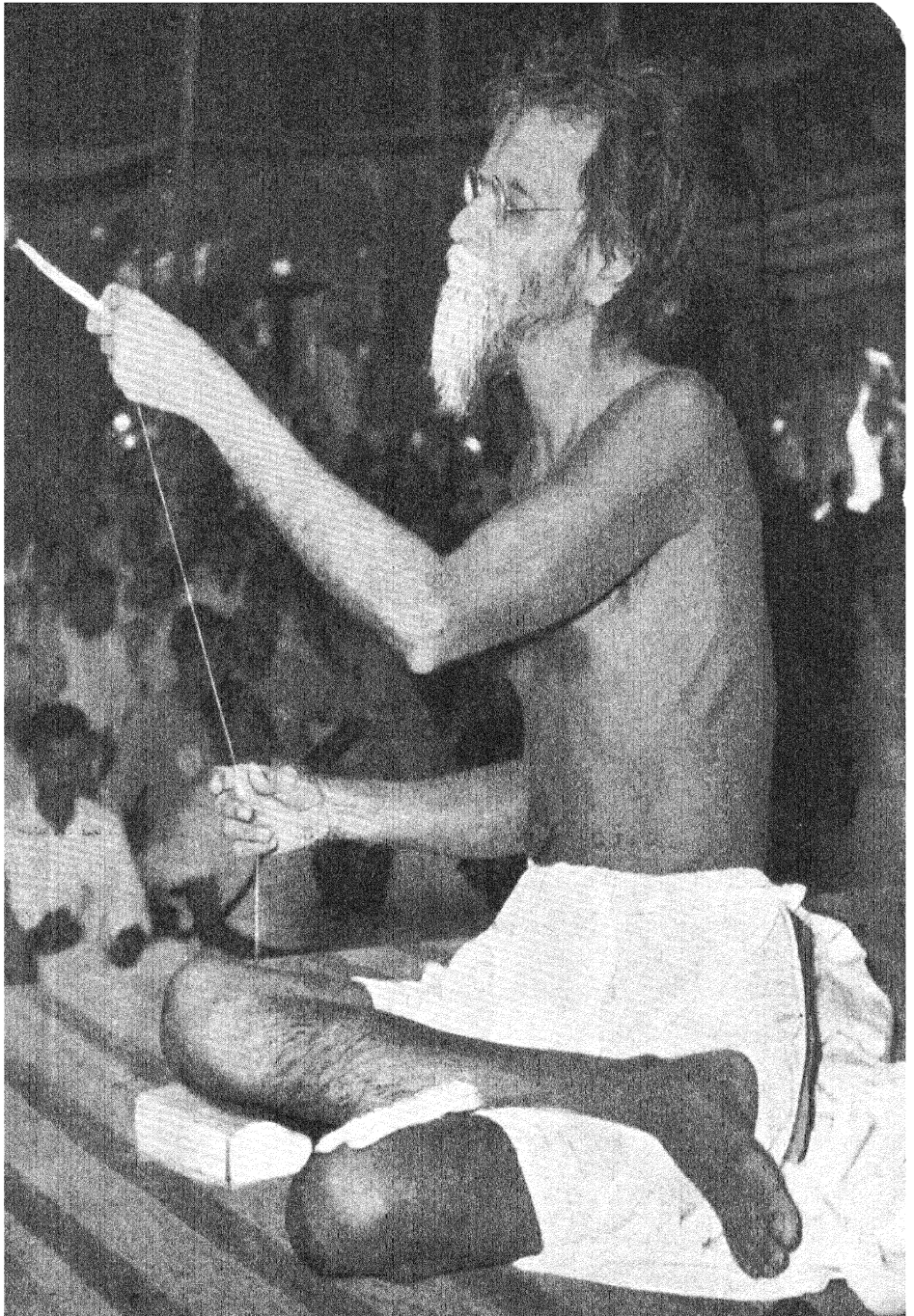
१९५२ में चाण्डिल के सर्वोदय सम्मेलन में भाषण देते हुए विनोबा जी ने कहा—'भूदान के कार्य के साथ-साथ मैंने हाल में सम्पत्तिदान-यज्ञ का नया प्रोग्राम चलाया है। भूदान-यज्ञ की सफलता के लिए यह ज़रूरी है।' विनोबा जी इस विचार से पूरी तरह सहमत हैं 'जब तक हम सम्पत्तिदान के कार्य में हिस्सा नहीं लेंगे तब तक हम आर्थिक स्वतन्त्रता और समानता का उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सकते।' विनोबा जी का विश्वास है कि भूदान से अगला कदम सम्पत्तिदान ही है। क्योंकि यह स्पष्ट है कि भूदान योजना के द्वारा जिन भूमिहीन गरीबों को भूमि मिलेगी, औज़ार आदि साधनों के बिना वे उस भूमि पर खेती कैसे कर सकते हैं? तब प्रश्न यह उठता है कि भूदान आन्दोलन के साथ ही साथ सम्पत्तिदान आन्दोलन भी क्यों न शुरू कर दिया गया। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए विनोबा जी ने कहा—'यह बात शुरू से मेरे ध्यान में थी किन्तु मैं तो उस बात को माननेवाला हूँ कि 'मूल की भली प्रकार देखभाल होने से शेष सब अपने आप ठीक हो जाता है।' दूसरी समस्याओं की अपेक्षा ज़मीन की समस्या ही अधिक ज़रूरी है।

अपने उद्देश्य की सफलता के लिए जनता के सहयोग की माँग करते हुए विनोबा जी कहते है, 'मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि इस प्रजासूय यज्ञ में आप सब अपना भाग अदा करें और इस उद्देश्य को सफल बना कर आर्थिक क्षेत्र में समाज के लिए एक नियम के रूप में अहिंसा को स्थापित करें।'—बहुत आत्मविश्वास के साथ उन्होंने कहा 'इस काम के सही होने का दावा मैं तीन कारणों से करता हूँ। यह भारत की सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार है; इसमें आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति के बीज विद्यमान हैं; और अन्तिम बात यह कि इससे दुनिया में शान्ति कायम करने में सहायता मिलेगी। परिस्थितियों ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं बाहर आकर इस यज्ञ को शुरू करने वाला बनूँ। चाहे इसे धृष्टता समझिये या नम्रता मैं इसे ईश्वर को समर्पित करता हूँ और सब भाई बहनों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे इस काम में सहयोग दें।'